

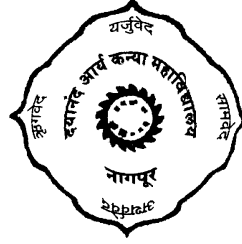


# **आर्य द्वाणी**

## **2018 - 2019**

आर्य विद्या सभा संचालित  
**दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय**  
जरीपटका, नागपुर

# दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय जरीपटका, नागपुर



**आर्य दायणी**  
**2018 - 2019**

# आर्य वाणी 2018 - 2019

## अनुक्रमणिका

अनु.क्र.	विवरण
1.	आर्य विद्या सभा के पदाधिकारी
2.	कॉलेज विकास समिती के सदस्य
3.	संस्था का परिचय
4.	शिक्षक तथा शिक्षकेतर सूची
5.	संदेश - श्रीमती दीपा लालवानी, सचिव आर्य विद्या सभा
4.	प्रमुख संपादकीय - डॉ. श्रद्धा अनिलकुमार, प्राचार्या
8.	वार्षिक रिपोर्ट 2018-2019
9.	राष्ट्रीय सेवा योजना अहवाल 2018-2019
10.	शारीरिक शिक्षा विभाग रिपोर्ट
10.	ग्रंथालय रिपोर्ट
11.	हिंदी रचनाएँ संपादन - डॉ. नीलम वीरानी, हिन्दी विभाग
12.	अंग्रेजी रचनाएँ संपादन - डॉ. चेतना पाठक, अंग्रेजी विभाग
13.	मराठी रचनाएँ संपादन - प्रा. बबीता थूल, मराठी विभाग

-:: प्रमुख संपादक ::-

ख संपादक ::-

डॉ. श्रद्धा अनिलकुमार

-:: संपादक मंडल ::-

डॉ. नीलम वीरानी

डॉ. चेतना पाठक

प्रो. बबीता थूल

-:: छात्र संपादक ::-

कु. शेफाली नंदेश्वर

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, जरीपटका, नागपुर

**ARYA VIDYA SABHA**

Shri Ashokkumar Kriplani	President
Shri Ghanshyamdas Kukreja	Vice President
Smt. Deepa Lalwani	Secretary
Shri Vedprakash Wadhwani	Joint Secretary
Shri Bhushan Khubchandani	Treasurer
Shri Dayaram Kewalramani	Member
Shri Karamchand Kewalramani	Member
Dr. Abhimanyu Kukreja	Member
Shri Lalchand Lakhwani	Member
Shri Chandulal Kewalramani	Member
Shri Hariram Khubnani	Member
Shri Vedprakash Arya	Member
Shri Rajesh Lalwani	Member
Shri Harish Kewalramani	Member

**Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya College  
Development Committee (CDG)  
Run By Arya Vidya Sabha**

Shri Ashokkumar Kriplani	President
Shri Ghanshyamdas Kukreja	Vice President
Smt. Deepa Lalwani	Secretary
Shri Vedprakash Wadhwani	Joint Secretary
Dr. Abhimanyu Kukreja	Member
Dr. Shraddha Anilkumar	Principal (D.A.K. Mahavidyalaya)
Mrs. Parineeta Harkare	Member (Teacher Representative)
Dr. Monali Masih	IQ AC (Coordinator)
Dr. Tanuja Rajput	Member (Teacher Representative)
Dr. Ritu Tiwari	Member (Teacher Representative)
Mrs. Anita Sharma	Member (Teacher Representative)
Mr. Harish Chanchlani	Member (Non-Teaching Representative)
Ms. Sonika Khubchandani	Ex-Student (Representative)
Ms. Jyoti Gumasta	Student (Representative)

## संस्था का परिचय

आर्य समाज के अनेक रचनात्मक कार्यों में स्त्री शिक्षा प्रचार एक महत्वपूर्ण कार्य रहा है। इस क्षेत्र में स्थानीय छात्राओं की उच्च शिक्षा की कोई सुविधा न होने से छात्राएँ उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती थीं। अतः आर्य समाज जरीपटका के संरक्षण में स्थापित आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय की स्थापना सन 1983 में हुई।

सन 1960 में स्थापित आर्य विद्या सभा आज पूर्व प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा की ओर लगातार प्रयत्नशील है। स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में सभा के परिश्रम व लगन तथा सरकार के प्रोत्साहन से महाविद्यालय ने नामपुर शहर में एक मौखप्रद स्थान प्राप्त किया है। यह महाविद्यालय के लिये गर्व की बात है कि वर्ष 2004-05 फरवरी में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) ने महाविद्यालय को B<sup>+</sup> ग्रेड प्रदान किया। वर्ष 2011-12 सितम्बर के पुनर्मूल्यांकन में बी ग्रेड प्राप्त हुआ। तथा वर्तमान में 2018-19 सितंबर में पुनर्मूल्यांकन में भी B ग्रेड प्राप्त हुआ। नामपुर विश्वविद्यालय ने भी कॉलेज को स्थायी संलग्नता प्रदान की है। आर्य विद्या सभा ने महाविद्यालय के वर्तमान स्थान से लगभग 2 कि.मी. दूर दो एकड़ जमीन खरीदी है, जहाँ भविष्य में महाविद्यालय की विशाल इमारत निर्मित होगी। शिक्षण सत्र 2008-09 से महाराष्ट्र शासन द्वारा स्वीकृत बी. कॉम कम्प्यूटर एप्लीकेशन पाठ्यक्रम चलाया जाता है।

महाविद्यालय का ध्येय छात्राओं को मात्र शिक्षित करना ही नहीं है अपितु भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के आधार पर वर्तमान अनुशासनहीनता और आचारहीनता के वायुमंडल में शालीनता, पवित्रता एवं राष्ट्रीयता की अनुपम ज्योति जमाना भी है।



## संस्थापक पदाधिकारी

स्व. श्री कन्हैयालाल कुकरेजा

स्व. श्री अर्जुनदास कुकरेजा

स्व. श्री चंदीराम वाधवानी

स्व. श्री संगतराम आर्य

स्व. श्री ठाकुरदास लखवानी

स्व. श्री आसुदास खूबचंदानी

# **Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya**

## **Jaripatka, Nagpur**

### **TEACHING STAFF**

**Dr. Shraddha Anilkumar**

**Principal**

M.A.(Soc.), M.Lib.Ph.D.

**Mrs. Indu Mamtani**

**Associate Professor**

M.Com., M. Phil., Ph.D

**Mrs. Parineeta Harkare**

**Associate Professor**

M.Sc.(Home Sci.), M.Phil

**Miss Geeta Galani**

**Associate Professor**

M.Com., M. Phil.

**Dr. Tanuja Rajput**

**Associate Professor**

M.Com., M.Phil., Ph.D.

**Dr. Sujata Chakravorty**

**Associate Professor**

M.A.(Eng.), M.Phil., Ph.D.

**Mrs. Sujata Sakhare**

**Assistant Professor**

M.A.(Home Eco.),M.Phil,  
NET, Ph.D.

**Miss Ritu Tiwari**

**Assistant Professor**

M.A.(Eco.), NET, Ph.D

**Dr. Mughda Deshpande**

**Assistant Professor**

M.Com, M.Phil, SLET, Ph.D.  
MA (Eco)



**Mrs. Anita Sharma**

**Assistant Professor**

M.A. (Music) NET

**Ms. Monali Masih**

**Assistant Professor**

M.A.(Music), B.Ed., M.Phil,  
NET, Ph.D

**Mrs. Varsha Agarkar**

**Assistant Professor**

M.A.(Eng.), B.Ed., NET

**Dr. Chetna Pathak**

**Assistant Professor**

M.A.(Eng.), B.Ed., Ph.D.

**Mrs. Babita Thool**

**Assistant Professor**

M.A.(Pol.Sci.), NET M.Phil

**Dr. Meena Balpande**

**Assistant Professor**

M.A.(Eng.), B.Ed., Ph.D., NET



## NON – TEACHING STAFF

Mr. Shyamsundar Lalwani	Office Superintendent M.Com., M.A.(Eco.)
Mr. Harish Chanchalani	Head Clerk B.Com., LL.B.
Mrs. Shanti Jashnani	Sr. Clerk B.C.A.
Mr. Neeraj Babuwani	Jr. Clerk
Mr. Ajay Kataria	Jr. Clerk
Ms. Sneha Balani	Library Attd. B.Sc., B.Ed.
Mr. Deepak Sakhare	IV Class
Mrs. Anita Kalamkar	IV Class
Mr. Nitin Burde	IV Class
Mr. Rupesh Sahare	IV Class

## संदेश

प्रिय बच्चों,

विगत 36 वर्षों से आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय से मेरा निकटतम संबंध रहा है। मैंने निरंतर छात्राओं की गतिविधियों का अवलोकन कर उन्हें उचित दिशा में मार्गदर्शन देने का प्रयत्न किया। आर्य समाज की विचारधारा से अनुप्राणित यह शिक्षण संस्था सदैव छात्राओं को चरित्रवान, दृढ़ आत्मविश्वासी और स्वावलंबी बनाने की दिशा में अग्रसर है।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने नारी जाति की खीड़ हुई गरिमा को पुनः प्रतिष्ठित किया। आर्य समाज की यह दृढ़ धारणा है कि जब तक नारी वर्ग को पुरुष के समतुल्य शिक्षित एवं यौग्य नहीं बनाया जाएगा तब तक उससे समाज विकास के लिए किसी महत्वपूर्ण योगदान की अपेक्षा नहीं की जा सकती। फलतः महर्षि दयानंद ने नारी शिक्षा हेतु अदम्य प्रयास किया। जब देश परतंत्रता की बैड़ियों में जकड़ा था, उस समय आर्य समाज ने कन्याओं के लिए शिक्षण संस्थाएँ स्थापित कर उन्हें घर की चारदीवारी की कैद से मुक्त कराकर खुली हवा में सौँस लेने का अवसर प्रदान किया।

गुजराती भाषी स्वामी दयानंद ने हिन्दी को अपनाकर यह सिद्ध कर दिया कि सम्पूर्ण भारत के लिए वर्तमान युग में यही भाषा उपयुक्त है। उनके लिखे ग्रंथ पढ़ने और उनके प्रवचनों को सुनने के लिए भारत के विशाल जनसमुदाय ने हिन्दी का अध्ययन किया। स्वामीजी ने पहले संस्कृत में ही भाषण का संकल्प लिया था पर जनसमुदाय के हितार्थ हिन्दी में भाषण देना उचित समझा। इससे ज्ञात होता है स्वामीजी ने तत्कालीन युग की आवश्यकता को देखते हुए हिन्दी को अंगीकार किया। इससे वैदिक प्रचार - प्रसार के साथ हिन्दी का भी प्रचार हुआ।

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय छात्राओं के अंतरंग और बहिरंग व्यक्तित्व विकास में अहम भूमिका निभा रहा है। पिछड़े वर्ग की छात्राएँ भी इस स्वर्णिम अवसरों का लाभ उठा रही हैं।

**शरीर और आत्मा में अधिक से अधिक जितने सौंदर्य और जितनी सम्पूर्णता का विकास हो सकता है उसे सम्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। - प्लेटो**

श्रीमती दीपा लालवानी  
सचिव, आर्य विद्या सभा

## संपादकीय

साहित्य मनुष्य की नैतिक और सांस्कृतिक जरूरतों को गढ़ने के साथ-साथ उसे आकार भी देता है। इसलिए उसका अवलोकन और निर्माण दोनों ही किसी भी जीवित सभ्यता के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। इसी दृष्टि को ध्यान में रखते हुए साहित्य सृजन की दिशा में छात्राओं को प्रेरित कर उनकी संवेदनशीलता, लेखनशक्ति, चिंतनधारा और कौशलों की अभिव्यक्ति को परिपक्व करने हेतु **आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय जरीपटका नागपुर से प्रतिवर्ष 'आर्यवाणी', पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है।** इसमें छपी सामग्री महाविद्यालय के बहुआयामी स्वरूप को रेखांकित करने के साथ-साथ छात्राओं की रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभा को विकसित करती है। जिससे छात्राओं में अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिकता का गुण भी विकसित होता है।

विवत 38 वर्षों से दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विद्यापीठ से स्थायी रूप से संलग्न है। साथ ही NAAC(National Assessment & Accreditation council) के थर्ड राउंड में 'बी', ग्रेड प्राप्त कर चुका है। हमारा महाविद्यालय पाठ्यक्रम की शिक्षा के साथ-साथ छात्राओं को महर्षि दयानंद सरस्वती के आदर्शों एवं संस्कारों पर आधारित शिक्षा दैनिक प्रार्थना, तकनीकी शिक्षा, कौशलों के विकास की शिक्षा साप्ताहिक हवन को प्रधानता देते हुए छात्राओं को रोजगार के विभिन्न अवसर प्रदान करवाकर महाविद्यालय निरंतर प्रगति के सोपानों को पार कर, उत्तर नागपुर में शिक्षा के क्षेत्र में अपनी साखा बना रहा है।

ICT के क्षेत्र में हम कहीं पीछे नहीं हैं। इसके अंतर्गत हमारा महाविद्यालय सोशल मीडिया, फेसबुक, ट्विटर, LinkedIn से जुड़ चुका है। कक्षाओं में अध्यापन PPT, YouTube जैसे सभी आधुनिक मॉडर्न तकनीकों के साथ-साथ ऑनलाईन प्रक्रिया द्वारा भी पढ़ाया जाता है। इसी के साथ विशेष उपक्रम के अंतर्गत कक्षानुसार और विषयानुसार प्राध्यापिकाओं द्वारा छात्राओं का व्हॉट्सअप ग्रुप बनाया गया है, जिसका अवलोकन और संचालन मेरे (प्राचार्या) द्वारा किया जाता है। छात्राओं की सहूलियत की दृष्टि से इस ग्रुप में सराव के लिए प्रश्नपत्र, नोट्स, समसामायिक

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, जरीपटका, नागपुर

संदर्भित जानकारी भी छात्राओं को दी जाती है। ICT के क्षेत्र में एक कदम और आगे बढ़ाते हुए हमारे महाविद्यालय में Paper to Paperless प्रक्रिया के अंतर्गत इस वर्ष छात्राओं की Online admission शुरू की गई है। साथ ही हमने cloudbase software का उपयोग करना भी प्रारंभ कर दिया है।

पर्यावरण प्रदूषण जैसी ज्वलंत समस्या को समूल नष्ट करने के लिए हमारा महाविद्यालय भी पूर्णतः प्रयासरत है। पर्यावरण संतुलन के लिए कार्य करनेवाली Ayurvan Foundation NGP के साथ हमारा महाविद्यालय (MOU) संलग्न है। समय को मांग को देखते हुए प्रकृति के संतुलन और सुरक्षा के लिए हमारे महाविद्यालय में Nature Club की स्थापना की गई है। जिसके अंतर्गत हम विभिन्न कार्यक्रमों को लेते हैं। जैसे कि इस वर्ष वृक्षारोपण के अंतर्गत 'एक छात्र-एक वृक्ष', घोषवाक्य को प्रत्यक्ष चरित्रार्थ किया गया। इसके अंतर्गत आसपास के परिसर में २५० वृक्ष लगाए ही नहीं गए बल्कि उसकी सतत सुरक्षा एवं देखभाल भी की जाती है। महाविद्यालय परिसर में 'औषधीय वाटिका भी स्थापित की गई है। जिससे छात्रों में औषधीय पौधों के उपयोग के प्रति जागरूकता निर्माण हो। इसी उपक्रम के अंतर्गत 'दिंडी यात्रा' निकालकर समाज में पर्यावरण संतुलन के प्रति जागरूकता निर्माण की गई। 'No Use of Plastic' और 'Save the Water' जैसे उपक्रम भी आयोजित किए गए।

समाज में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता और छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना निर्माण करने की ओर भी महाविद्यालय की ओर से अनेक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। NMC (Nagpur Municipal Corporation) के द्वारा 'फाइलेरिया रोग, (हट्टी रोग) समूल नष्ट करने के लिए जो अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत हमारे महाविद्यालय की NSS की छात्राओं ने सक्रिय सहभाग लेकर दस दिन पूरे उत्तर नागपुर में लोगों में जागरूकता निर्माण कर दवाईयाँ बांटी। हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव के दौरान समाज के लोगों को EVM (Electronic Voting Machine) मशीन के उपयोग का प्रशिक्षण दिया गया।

हमारे महाविद्यालय में छात्राओं के कौशलों के विकास को प्रधानता देने के लिए इस वर्ष 'प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजना के अंतर्गत, 'Air line customer service executive' Banking, GST, Tally यह Short Term Courses बिना किसी फीस के (Free of Cost) शुरू किए गए हैं। इन कोर्सेस के लिए

महाराष्ट्र शासन द्वारा 'महाराष्ट्र उद्योजकता विकास केंद्र' के साथ समन्वय किया गया है। जिसके अंतर्गत ऑडव्हांस डिजिटल मार्केटिंग प्रशिक्षण,, फैशन डिजाइनिंग प्रशिक्षण व अन्य प्रशिक्षण भी दिए जाते हैं। साथ ही सीखे गए प्रशिक्षण से कार्य को प्रारंभ करने के लिए लोन की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। ICICI CSR Skill Development Programme और सरकार द्वारा चलाए जानेवाले 'Swyam online free Training' का कार्य छात्राओं एवं प्राध्यापिकाओं द्वारा पूर्ण किया गया। रोजगार की समस्या का समाधान करने हेतु (MPSC) की कक्षाएँ भी बिना किसी शुल्क के आयोजित की जाती हैं। साथ ही छात्राओं के लिए इस वर्ष से 75% Placement की योजना भी बनाई गई है। इस हेतु हमारे महाविद्यालय की Website शिक्षा के हर एक मुख्य क्षेत्र जैसे UGC, RTMNU, Mah. Government से लिंक की गई है।

महाविद्यालय में छात्राओं के ज्ञान संवर्धन हेतु नवीन पुस्तकें तो मंगवाई जाती हैं साथ ही इसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (E-library) से जोड़ा गया है, जिससे सरलतापूर्वक छात्र संदर्भित पुस्तकों की आवश्यकता को पूर्ण कर सके।

महाविद्यालय में प्रतिवर्ष अंतरमहाविद्यालयीन वाद-विवाद, प्रश्नमंच, संगीत व खेलकूद प्रतियोगिताओं का उत्साहवर्धक वातावरण में आयोजन कर छात्राओं के व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास का हरसंभव प्रयत्न यहाँ किया जाता है।

आर्य विद्या सभा के सभी पदाधिकारियों के सतत मार्गदर्शन, प्राचार्य एवं समस्त प्राध्यापिकाओं के प्रयासों का ही यह फल है कि आज हमारा महाविद्यालय नागपुर के श्रेष्ठ महाविद्यालयों में से एक है तथा दिन प्रतिदिन ऊँचाइयों की बुलंदियों को छूता जा रहा है। अतः इन समस्त गतिविधियों का संपूर्ण विवरण एवं छात्राओं के स्वयंरचित लेख इस पत्रिका में संग्रहित हैं।

**डॉ. श्रद्धा अनिलकुमार**

**ANNUAL ACADEMIC REPORT – 2018 - 2019**

Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya is an institution run by Arya Vidya Sabha an organization run on the principles of Swamy Dayanand Saraswati. The main aim of the institution is to develop the overall personality of the students keeping the ideals of National Integration in the mind. The institution focus on the mental, social, cultural and spiritual development of the students. Havan, daily assembly and moral teaching unable creation of the healthy environment.

**On 21/06/18 International Yoga Day :-** D.A.K.M. senior as well as Junior College, Jaripatka has jointly organized 4<sup>th</sup> International Yoga day with enthusiastically in the college on 21<sup>st</sup> June 2018 under the guidance of secretary Mrs. Deepa Lalwani, college officiating Principal Dr. Shraddha Anilkumar & Tejendra Vennugopal, Yogacharya Kedarji Joshi was the Chief Guest. While addressing the students he stressed upon the importance of Yoga & how it motivates the self confidence & heating of the life.

**On 11/7/2018 World Population Day :-** On the occasion Dr. Vivek Chauhan was chairperson & guided the students programme and guided the students on population problems in India .Dr. S. Anilkumar off. Principal is also present & guided the students.

**On 26/08/2018 to 03.09.2018 Ved-prachar saptah :-** On the occasion of Ved Prachar Saptah a grand programme was arranged, where Pandit Vishnumitra Shashtri and Pt.. Amrish Arya spoke on the morality and ethics to infuse value system in the college.

**On 15/08/2018 Independence day :-** The Chief Guest was Dr P. Sivaswarup, Director of Nagpur Division & Shri Sacchanand Kewalramani Social Worker & Businessman.

**On 28/08/18 International Youth Day :-** Lecture delivered by Ms. Bharti Jambhulkar on the topic HIV Aids safe spares for the youth off. Principal Dr. S. Naidu welcome the guests & also guided the students.



**On 11/09/ 2018 Digvijay Diwas :-** 125<sup>th</sup> Birth anniversary celebrated as Digvijay Diwas as famous Hindu mark Swami Vivekananda delivered his first speech in the world's religions in conference at Chicago.

**On 14/09/ 2018 Hindi Diwas :-** Essay writing competition, Poster Competition arranged for students.

**On 24/09/ 2018 N.S.S. Foundation Day :-** N.S.S. Dept. had organized Mental health Awareness Programme in youth collaboration with Lions Club.

**On 23/09/2018 Painting Workshop :-** Pidify Organisation has arranged the workshop on painting workshop and guided the students.

**On 02/10/ 2018 Gandhi Jayanti :-** Dr. S. Anilkumar gave a speech on Gandhi Jayanti and celebrated the Jayanti in the college NSS students did the "shrmada" and clean the college premises.

**On 25/11/2018 Diwali Milan :-** Guest - Dr. Vandana Khushalani . Diwali Milan was organized and an interaction took place between the staff and the management.

**On 26/11/ 2018 Constitution Day :-** On constitution day students participated in the rally from Sanvidhan chowk.

**On 06/01/2019 to 08/01/209 Three Days Worshop :-** Free health check up camp and Dental Check up Camp at Indira Nagar Nagpur arranged by NSS and Dr. Dipti Sharma.22222

**On 01/03 to 5/03/2019 Rishi Bodhotsav Parv :-** Acharya Chaturvedi visited the college & also Shri Nardev Arya from Rajasthan and presented Bhajans.

**On 13/01/2019 Health Check up Camp :-** Dr. Bhave has taken the camp at College and 300 students participated in the function.

**On 19/01/2019 Inter Collegiate Poster Competition :-** 8 Team participated in the competition Judge was Dr. V. Khushalani, Ex Principal of our College.

**On 24/01/2019 Intercollegiate Debate Competition :-** 18 colleges participated in the Competition Topic – "Demonetisation is necessary for all round development of the India." Guest was Dr. Rajesh Pashine and Dr. Sonia Jeshwani.



**On 26/01/2019 Republic Day:** - Republic day function was organized at college. The guest were dr. Ravindra Joshi and Dr. S. Anilkumar. The students presented patriotic songs and dance.

**On 27/01/2019 Sports Day :-** Late Smt. Devi Ji Lalwani Smruti Inter Collegiate volleyball competition organized in the college 6 team participated.

**On 07/02/ 2019 Workshop on voucher redeem nation :-** Lifelong learning & extension dept. has organized workshop on regarding Maharashtra govt. scholarship & free ship schemes. Smt. Manjusha Dive & Prarthana Dive was present.

**On 10/02/2019 to 14/02/2019 Rishi Bodhotsav Parv :-** A special hawan was held on the occasion. Acharya Shivkumarji guided the students. Bhajansamrat Pt. Amresh Arya sang melodious Bhajans

**On 16/02/2016 Inter Collegiate Music Competition :-** Smt. M. Joshi & Smt. Pradnya Nagrare judged the competition Bhavgeet 12 teams participated.

**On 08/03/2019 International Women's Day :-** Smt. Sangita Pande and Mr. Pande family counselor were the guest. Principal and all students and staff participated in the programme.

**On 01/03/2019 to 05/03/2019 Rishi Bodhotsav :-** Acharya Suryadevi Chaturvedi visited the college & also recital of Bhajans by Shri Nardev Arya from Rajasthan.

*Dr. Monali Masih*



## NATIONAL SOCIAL SCHEME ANNUAL REPORT 2018 - 2019

This year one units of girls 100 were admitted in NSS program. NSS advisory committee has been formed as follows :-

1)	Dr. Shraddha Anilkumar	Principal	President
2)	Shri Virendra Kukreja	Corporator	Member
3)	Prof. Babita Thool	Asst. Prof.	Member
4)	Dr. Meena Balpande	Asst. Prof.	Member
5)	Namrata S. Prasad	Stu. Representative	Member
6)	Neha P. Gokhle	Stu. Representative	Member

**20<sup>th</sup> June to 30<sup>th</sup> July, 2018** :- Registration of N.S.S. Students

**21<sup>th</sup> June 2018** :- Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya senior as well as junior college, jaripatka has jointly organized 4<sup>th</sup> International Yoga Day with enthusiastically in the college on 21<sup>st</sup> June, 2018 under the guidance of secretary Mrs. Deepa Lalwani, college officiating Principal Dr. Shraddha Anilkumar & Tejindra Vennugopal, Yogacharya Kedarji Joshi was the chief Guest. While addressing the students he stressed upon the importance of yoga and how it motivates the self confidence and healing the life.

**28<sup>th</sup> June 2018** :- Free one day computer training to all teaching staff. Pinkin Amarnani addressed the teaching staff.

**1<sup>st</sup> July 2018 – 31 August 2018** :- “One Student – One Tree” campaign programme Tree plantation programme at Dayanand Park, Jaripatka, Nagpur. Dr. Shraddha Anilkumar officiating Principal guided the students on ecofriendliness.

**11<sup>th</sup> July 2018** :- Dr. Vivek Chauhan addressed the students on the topic “Over population and its impact on environment”. Dr. Shraddha Naidu, officiating Principal welcomed the guests as well as guided the students.

**1<sup>st</sup>-15<sup>th</sup> August 2018 :-** NSS Dept of Dayanand Arya Kanya Mahavidyalya under the guidance of officiating Principal giving owtth has encouraged the girls student to participate in the cleanliness programme. The students have implemented the successfully this programme within the premises of Bus Stop, Market, Janta Hospital in jaripatka. They have organized rally by showing cleanliness slogans for public awareness in drawing competition. At the concluding day well known senior editor of Lokmat Paper, Mr. Kishor Bagde distributed prizes to the students.

**7<sup>th</sup> August 2018 to 26<sup>th</sup> January 2019 :-** National & State level Republic Day pared practice Student attended the training programme at Gurunanak Bhavan, Amravati Road, Nagpur.

**15<sup>th</sup> August 2018 :-** The Indian tricolor was hoisted in DAKM by the chief guest Dr. P.Sivaswaroop, Regional Director, IGNOU, Nagpur. guest of honor Shri Bhushan Wadhwani & Vanwari Kalyan Ashram blessed the students for a bright and successful future. Shri Ghanshyamdas Kukreja, President of Arya Vidhya Sabha. Smt. Deepa Lalwani, Secretary, Shri Bhushan Khubchandani, Treasurer, & elicited the guests with shawl sapling and momentos. Dr. Shraddha Anilkumar read out the college annual report, patriotic songs and dances presented by the students enthralled the audience.

**28<sup>th</sup> August 2018 :-** International Youth Day, Ms Bharti Jambhulkar & Mrs. Anita Indian Institute of youth welfare shivaji nagar. Ms.Bharti addressed the students on the topic “H.I.V. Aids – Safe Spaces for youth”, officiating Principal Dr. Shraddha Anilkumar welcomed the guests as well as guided the students

**1<sup>st</sup> September 2<sup>nd</sup> October 2018 :-** On the occasion of Gandhi Jayanti & Clean India Initiative. 60 students cleaned the college premises and conducted group singing competition

**1<sup>st</sup> September 31<sup>st</sup> October 2018 :-** Voting registration was carried out 200 students were registered.

**8<sup>th</sup> Sept. To 14<sup>th</sup> Sept. :-** On the occasion of International Literacy in college was celebrated in this Mr. Kishor Bagde journalist guided the students, As well as giving away prizest to the students who win various competitions at their hands.

**11<sup>th</sup> September 2018 :-** On the occasion of Digvijay Diwas the college was celebrated as Swami Vivekanand 125<sup>th</sup> Birth, Digvijay Diwas as famous Hindu mark Swami Vivekananda delivered his first speech in the world's religions in Chicago. Students read this speech.

**24<sup>th</sup> September 2018 :-** On the occasion of NSS Foundation Day had organized Mental Health Awareness in youths on Monday 9<sup>th</sup> Oct 2018 in collaboration with Lions Club of Nagpur Team.

**1<sup>st</sup> October 2018 :-** On the occasion of Vishwamangal Chatra Parishad Students & Incharge attended the Vishwamangal Chatra parishad at Chitnavis Centre, Nagpur.

**11<sup>th</sup> - 13<sup>th</sup> October 2018 :-** Three day camp (HIV Test & General Health Check-up camp) NSS Unit had organized free HIV Test & General Health Check-up camp at college with Dr. Vinod Bagde, Ku. Bharti Jambhulkar & Team

**15<sup>th</sup> October 2018 :-** On the occasion of Vachan Purna Diwas Celebration of Birth Anniversary of Dr. A.P.J. Abdul Kalam observed as 'Vachan Purna Diwas'. Students participated in Loud Reading Competition speech delivered by students. Dr. Shraddha Anilkumar, off. Principal presided the Chair Person as well as addressed the students

**16<sup>th</sup> October 2018 :-** Celebration of 150<sup>th</sup> Birth Anniversary of Mahatma Gandhi at our college. On this occasion we are organizing college competition on following topics. Elocution, Paiting, Singing, Essay.

**27<sup>th</sup> October 2018 :-** On the occasion of World white cane day National federation of the blind organized an event on the occasion of world white cane day, where NSS students volunteered & escorted the Blind people throughout the event.

**26<sup>th</sup> Nov. 2018 :-** On the occasion of Constitution Day students participated in the rally from sanvidhan chowk to Nagpur University & Lata attended & participated in the "Oath" ceremony presented Dr. S. Kane (V.C.) & Dr. Keshav Walke

**8<sup>th</sup> January 2019 :-** NSS Meeting Elephant eradication programme Elephant eradication programme Incharges attend meeting of Matrusewa Sangh, Institute of Social Work, Bajaj Nagar, Nagpur.

**8<sup>th</sup>-10<sup>th</sup> January 2019 :-** An organ donation Awareness programme was organized by Inner Wheel Club & NSS Unit of D.A.K. Mahavidyalaya under the guidance of principal Dr. Shraddha Anilkumar. Dr. Ravi Wankhede known Director of Mohan Foundation was the Chief Guest. While explaining the salient features of organ donation movement through audio visuals and conversation with the give students.

**11<sup>th</sup> January 2019 :-** On the occasion of Gramgeeta-values of Life Dr. Bhelkar guided the students on Gramgeeta values of life

**11<sup>th</sup> January 2019 :-** On the occasion of EVM voting Awareness Programme Students participated in a large number of EVM voting programme

**12<sup>th</sup> January 2019 :-** On the occasion of Right to Information Dr. Navin Agrawal Sindhu Mahavidyalaya Nagpur guided the students on R.T.I.

**15<sup>th</sup> January to 21 January 2019 :-** Special Seven Day camp of NSS Unit a week long campus held at Indira Nagar Basti. All the NSS students participated in the program with full enthusiasm. The camp witnessed health check up camp, Blood Donation Hemoglobin & Blood group test check up camp, Eye check up organ Donation Awareness programme Dental Check up camp various other social issued like cleanliness, constitution Awareness Programme.

**20<sup>th</sup> January to 30 January 2019 :-** Elephant eradication Programme the filariasis Resorption campaign the girls distributed medicine to the house from 20<sup>th</sup> January to 30 January 2019 Nagpur metropdition municipality has to the health department of health department of safe deposit.

**26<sup>th</sup> January to 2<sup>nd</sup> February 2019 :-** On the occasion of Lokshani Pandharwada Various programme were organized under lokshahi pandharwada Lokshahi election and good governance about this the panic put to the college, name of the students 18 years registered in the voter list. Pathnatya, slogan, poster, competition, selfie points were created Dr. Navin Agrawal distributed prizes to the students.

**9<sup>th</sup> Feb 2019 :-** On the occasion of Youth Summit National Council for promotion of Sindhi language of Bhartiya Sindhu Sabha, Nagpur presents students & Incharge

attended the programme at Vanamati Hall behind Bhole Petrol Pump VIP Road, Dharampeth Nagpur.

**23<sup>rd</sup> Feb. to 24<sup>th</sup> Feb. 2019 :-** On the occasion of NSS Two Day Workshop Two day works in the programme officer participated at Balewadi Pune.

**7<sup>th</sup> March 2019 :-** On the occasion of EVM voting Awareness Programme the students participated in a large number of EVM voting programmes

**8<sup>th</sup> March 2019:-** On the occasion of International Women Day Dr. Deepti Sharma dental surgeon the students and women have guidance about dental problems by ppt

**23<sup>rd</sup> March 2019 :-** On the occasion of Vidhyarthi Chhatra Parishad, NSS students and In charges participated in “Shahid Samman Yatra”

**5<sup>th</sup> April to 10<sup>th</sup> April, 2019 :-** On the occasion of Voting Card Distribution Programme College Principal Dr. Shraddha Anil Kumar, Assistant Professor Babita Thool, Varsha Agarkar distributed voting card.

*Mrs. Babita Thool*



# SPORTS REPORT

2018 -2019

In the year 2018-19, Department of the Physical Education of the college formed Physical Education Department Programme Committee under the guidance of Principal Dr. Shraddha Anilkumar.

The Committee has been organizing various Games and Sport programme, Inter-collegiate Competition. Lectures on Physical Education, Physical Fitness, Anatomy & Psychology, Mental Development and Moral Support in health. Nutrition and Healthy Diet Information and Guidance were conducted.

The purpose of the committee is to encourage Students and Teachers also to take active interest and participation in right games in RTM Nagpur University Inter-Collegiate programme. We prepare those students in the way to conduct the programme, comparing, doing discipline duty, refreshment and so on.

## AIMS AND OBJECTIVE OF THIS COMMITTEE

- To prepared the student to participate the all India University tournament with good performance.
- To Strengthen the Foundation of Training & Coaching in Modern Education.
- To Motivate Students to prepare for career in Sports and Physical Education.
- To inculcate the spirit of State Level, National Level and International Level programme from time to time.
- To help students develop their personality through different types of games in Physical Education & Sports.
- To make student understand how sports help in maintaining good health, hormonal balance, physical, mental development in the Body. 'Sound Mind in a Sound Body and Health is Wealth' in sports.

## Celebrate the Sports Day with excitement

Physical Education Department of Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya had organized National Sports Day on 29<sup>th</sup> August 2018 by performing variety of Intramural events. There are Carom, Chess, Tug of War etc. Total 50 students had participated. Ku. Jyoti Sinha B.A. II of class bagged Ist prize & IInd prize bagged Ku. Chandrakanta Sharma, Khushbu Ram got the first place in carom competition & IInd prize got the Prachi Bhaisare winner students felicitated with a trophy & certificate.

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, जरीपटका, नागपुर



The Chief Guest of the National Sports Day NADA Secretary & Phy Edu. College Koradi's Principal Dr. Sharad Suryawanshi are present in the programme. At the beginning of the programme he was welcomed by Hockey Legend Dhyanchands floral flue. After this, principal Dr. Shardddha Anilkumar welcome the chief Guish to Shawal & Shreefal sports HOD Dr. Meena Balpande told Dhyanchand Life Story.

Sharad Suryawanshi Provided guidance about the fitness & his work reviewed the change & importance of the game. Explain how joins are available in the game and guidance about how scholarship get from game & sports & guided students about healthy health Principal Dr. Shraddha Anilkumar illustrate how the game improves health & Dr. Meena Balpande introduced the guest and tried to make the programme successful.

### **Jyoti Sports & Fitness Accademy & Athletics training Centre Nagpur.**

Jyoti Sports & Fitness Accademy & Athletics Training Centre Nagpur organized the Distric Level cross country competition Dated on 19<sup>th</sup> August 2018 morning 6:00 a.m. held at Reshimbagh Ground, Nagpur.

Our Dayanand College girls participated, Distric Level cross country Run, in 4 km & 6 km. Athlete names are as follows -

Tannu Dhamgaye, Sujain Andrew, Simanjali Gupta, Priyanka Prajapati, Nisha Prajapati, Kajal Patel, Aachal Walde

### **Cross – Country 2<sup>nd</sup> Sept. 2018 – 19**

Inter Collegiate cross country held at R.T.M. Nagpur University play ground organized by R.T.M. Nagpur University dated on 02.09.2018. Our college cross country team actively participated. The cross country race is 10 km run. Men & Women Athlete names are as follows.

Neha Raju Bhakre, Preeti Patiram Markam, Riya Kishor Bhaisare, Bharti Tejlal Bisen, Anushree Vijay Raut

### **Inter Collegiate Kabaddi Tournament**

Inter Collegiate Kabaddi Tournament held at R.T.M. Nagpur University play ground organized by R.T.M. Nagpur University Nagpur dated on 25/09/2018. Our college Kabaddi Team actively participated Dayanand College Vs D.N.C College, Nagpur. Players names are as follows :- Arpana Anil Meshram, Mona Ashok Bhardwaj, Shital Chandrashekhar Bankar, Aakansha Waghmare, Kajal Patel, Upashika Ajay Ambade, Shwetali Sanjay Ramteke, Khushbu Balchand Ram, Hamida Abdul Ansari, Poonam Kailash Ajit, Tannu Jitendra Dhamgaye, Sujain Domnic Andrew



### Inter Collegiate Football Tournament

Women Inter Collegiate Football Tournament Organised the R.T.M. Nagpur University Nagpur Football Tournament held at Ishwar Deshmukh Physical Education College Hanuman Nagar, Nagpur. Dated on 27/09/2018 our college football team actively participated 1<sup>st</sup> round winner to Hislop College team & 2<sup>nd</sup> round lost to I.D.C.P.E. College Hanuman Nagar, Nagpur. The Players names are as follows –

Preeti Markam, Riya Bhaisare, Dipali Urkude, Payal Lilhare, Prajakta Yadav, Pooja Bhagat, Deepa Shetti, Anamika Ramteke, Anushree Raut, Arpana Meshram, Shital Bankar, Twinkle Khobragade, Manisha Sanesar, Anjali Valmiki

### Cycle Race Competition got cycle & II Place

Ku Poonam Patel from Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya get IInd Second Place in Cycle Race Competiiton. Dr. Madhukarrao Wasnik P.W.S. College Arts & Commerce College Nagpur & Rajkumar Kewalramani Kanya Mahaviyalaya, Nagpur. Collaboration of in the feast of Gandhi Jayanti organized the Cycle Race Competition for women category 11 km. distance & Men 21 km. distance Poonam Patel awarded Cycle and 2000/- Rs. price. Dayanand Arya Kanya College principal Dr. Shraddha Anilkumar gave gratulated the HOD of floral bouquet momento and HOD of Physical Education Department. Dr. Meena Balpande & All Professor Staff congratulated her for her success.

### Basket-Ball

Inter Collegiate Basketball Tournament held at R.T.M. Nagpur University play ground organized by R.T.M. Nagpur University dated on 5<sup>th</sup> Oct. 2018. Our college basketball team actively participated. Dayanand College Vs Centre Premium College Nagpur.

Players names are as follows :-

Anushree Vijay Raut, Rameshwari Chhotelal Bhagat, Nisha Rampal Daharwal, Samiksha Gumandas Dasriya, Jyoti Hanuman Kamble, Pratibha Devraj Sharma, Santoshi Sudhama Shahu, Naina Harish Meshram

### Volleyball

Inter Collegiate Volleyball Tournament held at R.T.M. Nagpur University playground Dated on 14 Oct. 2018 organized by R.T.M. Nagpur University. Our college team actively participated Dayanand Vs D.N.C. college Nagpur. Volleyball team Players names are as follows – Shwetal Ramteke, Hrutuja Jambhulkar, Simanjali Gupta, Prachi Jambhulkar, Saraswati Mansure, Priyanka Prajapati, Maheshwari Yadav

## Athletics

Inter Collegiate Annual Athletics Meet 2018 held at R.T.M. Nagpur University Athletics ground organized by R.T.M. Nagpur University dated on 12 to 15 October 2018. Our college Athlete were actively participated. Running Event, Jumping Event & Throwing event. Dayanand College athlete rank were Semi Final. Running Event – 100 mt., 200 mt, 400mt, & Relay Race participated Jumping Event : 100 mts, 200 mt, 400 mt & Relay race participated, Throwing Event : Long Jump, High Jump, Athlete names are as follows ; Preeti Markam, Arpana Meshram, Smita Sukhdeve, Mitali Sakhre

## Medical check up 2018-19

Student medical checkup are compulsory to be done by Medical Doctors from Rashtrasant Tukdoji Maharaj Nagpur University and All college it is compulsory to send the Medical Report from Medical Officer R.T.M. Nagpur University.

The Medical check up for Dept of Physical Education on 11<sup>th</sup> February 2019 to 14<sup>th</sup> February 2019 done by Dr. Raj Bhojwani. 679 students took this advantage to the Medical check up from B.A. I, B.Com & B.Com (Eng) I, II, III year. We had to fulfilled at least 192 from which comes from Hospital in that there was mentioned Height, Weight, BMI. Body mass Index and then we separated the Physical fir students & unfit students. Report was maximum girls weak & Low B.P.& nearest eye problem & Mentrul problem & Gyonc problem last report is submitted by Medical Officer RTM Nagpur University Nagpur.

## Physical Efficiency Test

RTM Nagpur Physical Efficiency Test is compulsory for all colleges so our conducted Dept of Physical Education dated on 06.03.2019 to 09.03.2019 we are called take Physical Efficeience Test External Examiner Dr. Surekha Dhatrak from Late V.N. S.S.M. Nagpur our college Total students were 679 & Attend the P.E.T. Test 520. Internal Examiner was me Physical Efficiency test. Event was 75 Mts Run shotpat, Long jump and skipping, Yoga and sit up also we were taking test in sports room and college premises.

Run by Arya Vidya Sabha Organised the Dept. of Physical Education. Intercollegiate Cross Country Competition on behalf of Cross country competition in Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Run by Arya Vidya Sabha Dept of Physical Education Organized the Inter Collegiate Cross Country Competition got good response. Cross Country Competition joint existing was held at Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Nagpur District Athletics Association & Lions Clubs dated on 27/01/2019. Womens player were total participation in seven team. Total Athelete was invoiled in cross country race. Ist

place price goes to Rs. 1100/- cash, Trophy & certificate. Dhanwate National Mahavidyalaya students who was Ku. Pranali Burde time taken was 17.53.35.

IInd place price goes to Rs. 900/- cash, Trophy & certificate S.B. City college students Ku. Shweta Vasule. Time taken was 18.14.32.

IIIRD place price goes to Rs. 700/- cash, Trophy & certificate SB City College. Students of Ku. Mayuri Borwad Time taken was 18.14.12

IVth place price goes to Rs. 500/- cash, Trophy & certificate Mahila Mahavidyalaya students of Ku. Divani Dongre her time taken was 18.11.67

Vth place winner price Rs. 300/- cash, Trophy & certificate goes to Sewadal Mahila Mahavidyalaya certificate goes to Sewadal Mahila Mahavidyalaya students of Pooja Dahane her time taken was 19:29:62. At price distribution ceremony was present president of Arya Vidya Sabha shree Ghanshyamdas Kukreja and Secretary Deepa Lalwani Chief guest of NADA Secretary Dr. Sharad Suryawanshi & Lion Club president, Smt. Kusum Jindal also & Shree Prabhat Chachodiya was present. Advisor of Arya Vidya Sabha Dr. Vandana Khushalani welcome guest of honour for Shawl & Shreefal principal of Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Dr. Shraddha Anilkumar welcome Smt. Asha Khemchandani & others Technical responsibility of cross country race under NADA secretary Dr. Sharad Suryawanshi, Ganesh Wani, Roshni Khobragade, Ichha Sahare, they are handled. In the competition was present Shri Rajesh Alone, Shri Sangode in price Distribution programme Dr. Sharad Suryawanshi provided guidance about the race & importance of Physical Fitness speech in competition Dr. Veena Jurani. To make the competition successful from Dept of Physical Education Dr. Meena Balpande & Prof. Anita Sharma, Prof. Babita Thool & others Staff Co-operation.

***Dr. Meena Balpande***



# LIBRARY REPORT

*Knowledge resources are the key  
for the growth of any educational institutio*

So welcome to the **Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya** college Library. A Library is a heart of any Institution. It is an integral part of the college education which revolves around teaching, research & consultancy.

Dayanand Arya Kanya Mahavidhyalaya with its commitment to learning provides the students with a fully equipped library consisting of books & journals on various topics. The aim of library is inculcating reading habits and encouraging research and academic activities by rendering information services at the senior level as well as the Post – Graduate level.

The Library has been established right from the inception of the college in 1986. Initially it had 150 books. The college has continued to add to its collection and at present it holds 13800 books, 150 bound volumes of back journals, thesis & Dissertations, Minor Research projects, previous year's question papers of RTM Nagpur University etc.

A user-friendly environment has been established in the library. Presently library assistant manages the library with prompt and effective online and offline Library Services. The library follows Dewey Decimal Scheme for classification and arrangement of books.

The Library seeks to promote the vision & mission of the college by providing timely access to the quality information in various forms (Print, Online, E-resources, CDs, DVD's) to meet the teaching and learning needs of the college staff and students.

Higher studies will have to require optimum use of library resources. In today's environment knowledge is a power. D.A.K. Mahavidyalaya's Library is open access that gives you a freedom to choose and read any books of any subject.

## VISION

To Help In Achieving Overall Institutional goal By Supporting Teaching – Learning Process through Learning Resources. It provides traditional and innovative library services to the right user at the right time.

## MISSION

College library is open access library that gives opportunity to users to provide diverse information. Library play important role to connect people to share, create and access knowledge. The Institute encourages the free exchange of information and ideas in a democratic society.

## LIBRARY COLLECTION

Sr. Collection types	Quantity
1 Books	13312
2 Journals and magazines	26
3 Journals bound volumes	150
4 News papers	08
5 E- News papers (direct link through college website)	10
6 Cd's and dvd's	225

## E-RESOURCES

Library has registered for journals and books from “N-List” sponsored by the INFLIBNET. This facility includes 3800+ e-journals and 97000+ e-books, open access resources and also

Database/Consortium	URL.	Type
UGC-NLIST	<a href="http://www.nlist.inflibnet.ac.in">www.nlist.inflibnet.ac.in</a>	Subscribed
DELNET	<a href="http://www.delnet.nic.in">www.delnet.nic.in</a>	Subscribe
Open Journals Access System (OJAS)	<a href="http://www.pkp.sfu.ca/ojs-journals">www.pkp.sfu.ca/ojs-journals</a>	Free
Yojana Magazine	<a href="http://www.yojana.gov.in">www.yojana.gov.in</a>	Free-Back Issues
DOAJ	<a href="http://www.doaj.org">www.doaj.org</a>	Free
NISCAIR	<a href="http://www.nopr.niscair.res.in">www.nopr.niscair.res.in</a>	Free
Competitive exam	<a href="http://www.tcyonline.com">www.tcyonline.com</a>	Partially free
Employment News	<a href="http://www.employmentnews.gov.in">www.employmentnews.gov.in</a>	E paper free with Print Subscription
Open J-Gate	<a href="http://www.openj-gate.com/search/Quick.aspx">www.openj-gate.com/search/Quick.aspx</a>	Free
OAISTER Resources	<a href="http://www.oclc.org/oaister/">www.oclc.org/oaister/</a>	Free

## SPECIAL COLLECTION

Encarta Dictionary		
Encyclopedia Britannica	—	22 Vol's
Hindi Vishvakosh	—	12 Vol's
New Std Encyclopedia	—	19 Vol's
Premchand Granthavali	—	20 Vol's
Jain Nendra Rachanavali	—	10 Vol's
Achary Ramchandra shukla	—	8 Vol's
Bacchan Rachnavali	—	6 Vol's
Nagarjun Rachanavali	—	5 Vol's
Prasad ki Rachanavali	—	5 Vol's
Bhavani Prasad Mishra	—	5 Vol's
Bhavani Prasad Mishra Rachanavali	—	5 Vol's
Ramkumar Varma Ekanki Rachanavali	—	5 Vol's
Tulasi Shabdha Kosh	—	2 Vol's
Manak Hindi ke Shudha Proyog	—	5 Vol's
Sampoorna Sursagar	—	5 Vol's
Gwleri Rachanavali	—	3 Vol's
Encyclopedia Dictionary of Financial Mgt—		3 Vol's
Encyclopedia Bio of Indian Freedom Fgt—		8 Vol's
Hindi Vishvakosh	—	24 Vol's
Bharat Gyankosh	—	4 Vol's
Hindi Vgutpattikosh	—	4 Vol's
Nirala Rachanavali	—	4 Vol's
Mukhibodha Rachanavali	—	5 Vol's
Encyclopedia of Political science	—	5 Vol's
Encyclopedia of Home science	—	5 Vol's
Encyclopedia of Child Development	—	5 Vol's
Encyclopedia of Sociology	—	12 Vol's
Encyclopedia of Economics	—	10 Vol's
Encyclopedia of Music	—	6 Vol's
Encyclopedia Dictionary of Management—		3 Vol's

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, जरीपटका, नागपुर

Encyclopedia of Food Science	–	3 Vol's
Encyclopedia of Education	–	4Vol's
Encyclopedia of Woman	–	10 Vol's

### **Arya Samaj Books**

Renu Rachanavali	–	5 Vol's
Siyaramsharam gupt Rachanavali	–	5 Vol's
Parsai Rachanavali	–	6 Vol's
Yashpal ki Sampoon Kahaniya	–	3 Vol's

### **LIBRARY SERVICES**

User Orientation Programme at the beginning of new session.

Lending Service (for under graduate students one book for one week)

(for post graduate students two books for one week)

Reprography Service

Reference Service

OPAC Service

Newspaper Clipping Service

Book Deposit scheme at (University Exam time)

Book Bank Scheme (only for economically backward class student)

Library Book Exhibition

Free Internet Facility

INFLIBNET – N-List facility

Copy of Syllabus, RTM Nagpur University previous year question paper set available in the Reading Room.

Display of new arrivals

Display of library books on special occasion

Career/Employment Information Services

Suggestion Box



## हिन्दी विभाग

संपादन डॉ. नीलम वीरानी

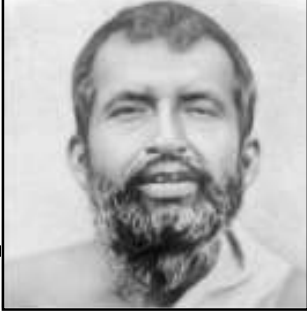
क्रमांक	विवरण	रचनाकार
<b>गद्य विभाग</b>		
१)	ज्ञानसंवर्धन	स्वामी रामकृष्ण परमहंस
२)	प्रसिद्ध सूफी संत उमर का शिक्षाप्रद तथ्य	कु. प्राची कांबळे
३)	पर्यावरण प्रदूषण एक समस्या	कु. युक्ती यादव
४)	पर्यावरण संकल्प एवं विनम्र आग्रह	
५)	आज के युग में नारी की स्थिति	कु. चाँदनी पाण्डेय
६)	औरत	कु. नेहा कुमार
७)	कम्प्यूटर का प्रयोग समस्या एवं समाधान	कु. प्राची जांभुलकर
८)	सिनेमा एवं हिंदी	कु. रेनी सिंह
९)	संचार माध्यम में हिन्दी	कु. अंजली राईकर
१०)	वृद्धाश्रम और अनाथाश्रम में बिताए पल	कु. श्रद्धा शर्मा
११)	सफलता का मंत्र	कु. ज्योती गुप्ता
१२)	मनुष्य की जीवन कथा	कु. जानवी टेंभुर्णे
१३)	मीराबाई	कु. राधा अहिर
१४)	हरिवंशराय बच्चन	कु. शांती पटेल
१५)	यदि परीक्षाएँ न होती	कु. नेहा शर्मा



## पद्य विभाग

१) विश्वभाषा भारती	कु. प्रगति वगाती
२) हिन्दुस्तान की शान	कु. नेहा शर्मा
३) यह देश कौनसा है	कु. जानवी टेंभुर्गे
४) माँ	कु. प्रिया चव्हाण
५) बेटियाँ	कु. हीना धनवानी
६) बेटी भ्रूण हत्या को रोको	कु. संजना नंदेश्वर
७) मजदूर की बेटी	कु. शेफाली नंदेश्वर
८) बापू के अनमोल वचन	कु. शीतल माने
९) माता	कु. हीना धनवानी
१०) हारी नहीं हूँ मैं	कु. ज्योती गुमास्ता
११) इंसान	कु. शेफाली नंदेश्वर
१२) अस्तित्व	कु. प्रियंका हनोते
१३) जीवन की आपाधापी में	कु. श्रद्धा शर्मा
१४) गम को कहीं छोड़ आते है	कु. अंकिता ठाकुर





## ज्ञानसंवर्धन

गुरुकुल के विद्यार्थियों में एक विषय पर बहस छिड़ गई कि क्या श्रेष्ठ है ? ज्ञान, सत्य, विवेक अथवा संयम ? सब अपनी-अपनी जिज्ञासा लेकर गुरु के पास पहुँचे। गुरु शिष्यों को संबोधित करते हुए बोले वत्स! इनमें से किसी का एकांगी महत्त्व नहीं है। ज्ञान के सहारे मनुष्य दूसरों को सत्य दिखा पाता है, सत्य के सहारे स्वयं तथा दूसरों को शांति दे पाता है, विवेक के सहारे सुखी बनता है, सुख प्रदान करता है और संयम बरतने पर दीर्घजीवी होता है तथा समस्त संपदाओं का सम्यक उपयोग कर पाता है।

ज्ञान के बाद और दूसरे लोक में जाना नहीं पड़ता, पुनर्जन्म नहीं होता। परंतु जब तक ज्ञान नहीं होता, ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती, तब तक संसार में लौटकर आना पड़ता है, उबला हुआ धान बोने से फिर पौधा नहीं होता। ज्ञानरूपी अग्नि से यदि कोई उबला हुआ हो तो उसे लेकर और सृष्टि का खेल नहीं होता।

अतः हमें ज्ञान प्राप्ति के मार्ग पर सतत अग्रसर होना चाहिए।

- स्वामी रामकृष्ण परमहंस



## प्रसिध्द सूफी संत उमर का शिक्षाप्रद तथ्य

कु. प्राची कांबळे

बी.ए. - प्रथम वर्ष

प्रसिध्द सूफी संत उमर का स्वभाव था कि वे परोपकारी थे। लोकहित के उद्देश्य से लोगों की परीक्षा लेते रहते थे। एक बार वे देशाटन पर निकले तो उन्हें मार्ग में एक चरवाहा मिला। उमर ने उससे एक बकरी देने को कहा। चरवाहे ने अपने मालिक का हवाला देकर ऐसा करने में असमर्थता जताई। तब उमर ने उससे कहा - “इतनी बकरियाँ हैं। इनमें से एक कम भी हो जाएगी तो तुम्हारे मालिक को पता थोड़े ही चलेगा। वैसे भी तुम्हारा मालिक तो यहाँ है नहीं। चरवाहा बोला - “मेरा मालिक तो नहीं देख रहा पर सबका मालिक खुदा तो देख ही रहा है। उसके साथ धोखा कैसे कर सकता हूँ ?” उमर उसको लेकर मालिक के पास पहुँचे और उसे सारा किस्सा कह सुनाया। वह चरवाहा उस व्यक्ति के यहाँ गुलाम के रूप में कार्यरत था। उमर ने मालिक से कहा - “खुद के बंदे को कौन गुलाम बना सकता है ? तुम इसे मेरे साथ आने दो। चरवाहे के मालिक ने उसे आजाद कर दिया और वह चरवाहा सूफी संत उमर के शिष्य के रूप में प्रसिध्द हुआ।

इस तथ्य से यह ज्ञापित होता है कि हमें जीवन में हमेशा सच्चाई की राह पर चलना चाहिए। किसी भी प्रकार के प्रलोभन में आकर हमें अपनी विचारधारा को बदलना नहीं चाहिए।





## पर्यावरण प्रदूषण एक समस्या

कु. युक्ती यादव

बी.कॉम. - प्रथम वर्ष

पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ होता है पर्यावरण का विनाश। यानि ऐसे माध्यम जिनके कारण हमारा पर्यावरण दूषित होता है। इसके प्रभाव को मनुष्य और प्राकृतिक दुनिया को ना भुगतना पड़े उससे पहले हमें इसके विषय में जानना और समझना होगा। मुख्य प्रकार के पर्यावरण प्रदूषण है-वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, उष्मीय प्रदूषण, मिट्टीप्रदूषण। जनसंख्या बढ़ती चली जा रही है जिसके कारण लोग घर बनाने के लिए वनों की कटाई जोरों से कर रहे हैं। इन बीते १०-१५ सालों में वनों की कटाई के कारण पृथ्वी में कई प्रकार के खतरनाक गैसीय उत्सर्जन हुए हैं।

हम एक ऐसे सुंदर ग्रह पृथ्वी में रहते हैं जो एक मात्र ऐसा ग्रह है जहां पर्यावरण और जीवन है। पर्यावरण को स्वच्छ रखने का एक ही सबसे बेहतरीन तरीके है पानी और वायु को स्वच्छ रखना। पर आज के दिन में मनुष्य इसके विपरीत सभी कार्य करने में लगा है जिसका सबसे बड़ा परिणाम प्रदूषण हमारे आँखों के सामने है। हमें इस बात को समझना होगा कि अगर हम पृथ्वी को बचाना चाहते हैं तो हमें कड़े कदम उठाने होंगे जिससे कि हम अपने पर्यावरण को दूषित होने से बचा सके। बिना जल और वायु के पृथ्वी में जीवन का अंत हो जायेगा इसलिए इन चीजों का संतुलन बनाये रखना बहुत आवश्यक है।

पृथ्वी का जीवमंडल कई प्रकार के चीजों का एक मिश्रण है जैसे ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन डायऑक्साइड, आर्गन और भाप। सभी जीवजंतुओं के लिए यह सभी चीजें बहुत ही जरूरी है हमें पृथ्वी को सुंदर, स्वच्छ और मानव के लिए एक बेहतर जीवन प्रदान करने के लिए पर्यावरण को नियमानुसार रखना होगा। लेकिन जिसप्रकार मनुष्य प्रकृति के साथ खिलवाड़ करते चले जा रहे हैं इसकी आशा बहुत कम दिखाई देती है।

पर्यावरण प्रदूषण का कारण - मनुष्य जाति इस स्थिति के लिए खुद ही जिम्मेदार है क्योंकि मनुष्य जाति ऐसी बहुत सी वस्तुओं का प्रयोग कर चुकी है। जिसे बनाने के लिए बहुत हानिकारक पदार्थों

का प्रयोग किया जाता है। और जब ये चीजें फालतू बच जाती हैं तो इन्हे फेंक दिया जाता है जिसकी वजह से हानिकारक कैमिकल्स आस-पास के वातावरण में फैलने लगते हैं और पर्यावरण को प्रदूषित कर देते हैं।

प्रदूषण की समस्या के बड़े-बड़े शहरों में ज्यादा देखा जाता है। क्योंकि वहां पर २४ घंटे कारखानों का और मोटर गाड़ियों का धुआँ बहुत ज्यादा मात्रा में फैल रहा होता है जिसकी वजह से लोगों को सांस लेने में बहुत समस्या होती है मनुष्य अपनी प्रगति के लिए वृक्षों को अंधाधुंध काटता जा रहा है जिसकी वजह से प्रदूषण की मात्रा बढ़ती जा रही है। मनुष्य प्रकृति से मिले इस अमूल्य धन को व्यर्थ ही नष्ट करता जा रहा है। पर्यावरण में कार्बन-डाइ-आक्साइड की अधिक मात्रा हो गई है जिसकी वजह से धरती का तापमान बढ़ता जा रहा है। धरती के तापमान बढ़ने की वजह से ओजोन परत को हानि हो रही है जिसके कारण सूर्य की किरण सीधी धरती पर पहुंचने लगी है और मनुष्य को अलग-अलग तरह की बीमारियां हो रही हैं।

पर्यावरण प्रदूषण हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। यह ग्लोबल वार्मिंग में वृद्धि का एक कारण होता है। पिछले दशक से पर्यावरण बहुत अधिक बढ़ गया है। लेखकों ने भी पर्यावरण प्रदूषण पर काम शुरू कर दिया है। प्रदूषण सभी तरह से पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है और जीवन की परिस्थिति को भी प्रभावित कर रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या - मिलों, कारखानों, मोटर वाहनों, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के द्वारा जो कार्बन-मोनो-आक्साइड गैस से जो अपशिष्ट और धुआं निकलता है उसे कृषि में उपयोग किया जाता है, नालियों का दूषित जल और वनों की कटाई की वजह से भी पर्यावरण प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है।

आज के समय में पर्यावरण प्रदूषण देश की सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है। यह केवल राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि एक अंतराष्ट्रीय समस्या बन चुकी है। वर्तमान समय में हम इस समस्या की वजह से सुखी और शांति पूर्ण जीवन व्यतीत नहीं कर पाएंगे। जब भी हम समाचार पत्र पढ़ते हैं, हर समाचार पत्र में पर्यावरण प्रदूषण के पक्षों को देखा जा सकता है।

यह केवल एक मनुष्य को नहीं बल्कि पूरे देश के नुकसान पहुंचता है और अगर यह समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती गई तो भारत को एक बहुत ही गंभीर समस्या का समाधान करना पड़ेगा। जो देश विकसित होता है, वहां पर इस तरह की समस्या बहुत ही कम होती है। हमारे देश का प्रत्येक

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, जरीपटका, नागपुर

मनुष्य इस समस्या को महसूस करता है लेकिन कोई भी इसे दूर करने की कोशिश नहीं करता है। पर्यावरण प्रदूषण के खराब प्रभाव बहुत ही हानिकारक होते हैं। पर्यावरण प्रदूषण से हमारी सामाजिक स्थिति खंडित हो जाती है। दुनिया में प्राकृतिक गैसों का संतुलन बना रहना जरूरी होता है लेकिन मनुष्य अपने स्वास्थ्य के लिए पेड़ों की अंधा-धुंध कटाई कर रहा है।

अगर यहां पर कोई पेड़ ही नहीं रहेगा तो पेड़ कार्बन-डाइ-आक्साइड को ग्रहण नहीं कर पाएंगे और आक्सीजन को छोड़ नहीं पाएंगे। ऐसे में पेड़ों के प्रतिशत की बहुत अधिक मात्रा में खपत हो जाएगी। कार्बन-डाइ-आक्साइड की वजह से ग्लोबल वार्मिंग की समस्या अधिक बढ़ जाएगी।

अगर प्राकृतिक संसाधनों से छेड़छाड़ की जाती है तो वह प्राकृतिक आपदाओं का कारण बनती है। जिसकी वजह से आज हमें विभिन्न प्रकार के रोगों ने घेर लिया है। जागरूकता लाने के लिए विकास की बहुत आवश्यकता है।

अस्तित्व प्रणाली में भी जीवन के लिए प्रदूषण एक खतरनाक प्रणाली बनती जा रही है। इसी वजह से बहुत सी गंभीर समस्याएं उत्पन्न होती जा रही हैं। वायु प्रदूषण की वजह से सांस लेने से फेफड़ों और श्वसन के रोग उत्पन्न होते जा रहे हैं। जल प्रदूषण की वजह से पेट की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। जल प्रदूषण की वजह से गंदा पानी पी रहे जानवरों की भी मृत्यु हो रही है। ध्वनि प्रदूषण की वजह से मानसिक तनाव, बहरापन जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। चारों तरफ चिंता और अंशाति छा जाती है। अतः

“प्रदूषण की समस्या इतनी बड़ी हो गयी है कि  
पर्यावरण के रास्ते में बाधक बनकर खड़ी हो गई है।”

इस बाधा से मुक्ति के लिए

एकजुट होना है हमें,

पर्यावरण को बचाना है हमें।

विश्वस्तर पर सर्वाधिक ज्वलंत समस्या

पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने की ओर

हमारे महाविद्यालय की एक पहल ‘पर्यावरण संकल्प’



विश्वस्तर पर सर्वाधिक ज्वलंत समस्या पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने की  
ओर हमारे महाविद्यालय की एक पहल पर्यावरण संकल्प

॥ ओ३म् ॥  
पर्यावरण संकल्प  
॥ सं गच्छध्वम् संवदध्वम् ॥  
(ऋग्वेद 10-181-2)  
साथ चलें मिलकर बोलें।  
उसी सनातन मार्ग का  
अनुसरण करो जिस पर  
पूर्वज चले हैं।

हमारी पृथ्वी का निरंतर बढ़ता तापमान, पिघलते  
ग्लेशियर, घटते वन और जीव जंतु इस बात की  
गंभीरता बताने के लिए पर्याप्त है की हम अपने  
ही अस्तित्व के विनाश की ओर जा रहे हैं।  
जलवायु में परिवर्तन इस तथ्य को इंगित करता  
है कि हमारे जागरूक होने का समय आ गया।  
कृपया साथ आइये, ये हमारी पृथ्वी है, हमारा  
गृह, हमारा आकाश और हमारा जीवन है।

## विनम्र आग्रह

१. पेड़ पौधे लगाएं।
२. पानी का संरक्षण करे, जल ही हर बूंद बचाए।
३. प्लास्टिक का उपयोग ना करे।
४. शौचर की जगह नहाने के लिए बाल्टी का उपयोग करे।
५. ईंधन बचाएं।
६. वाहनों के टायर में हवा का दबाव उचित रखे।
७. सौर उर्जा का उपयोग करे, बिजली बचाएं।
८. कमरे से निकलते समय लाईट, फैन, ए.सी. बंद करे।
९. उतना ही खाना लीजिए जितना खा सकते है।
१०. कारखानों का धुआं कम करे।
११. वाहनों का इस्तेमाल कम करे, सायकल का उपयोग करे।
१२. USE AND THROW नहीं USE AND REUSE कीजिए।
१३. उत्सवों पर पुष्पगुच्छ की जगह पर पौधा दे।
१४. स्थानीय उपलब्ध खाद्य पदार्थों का उपयोग करे और ट्रान्सपोर्ट पर होने वाले खर्च को घटाएं।
१५. कृत्रिम खादों, कीटनाशकों का उपयोग कम करे, भूमि ही उपजाऊ शक्ति को बढ़ाएं।

-:: विनीत ::-

डॉ. श्रद्धा अनिल कुमार (प्राचार्या)

प्रा. परिणीता हरकरे (इन्चार्ज) डॉ. मुग्धा देशपांडे (इन्चार्ज)



दयानंद नेचर क्लब  
दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय,  
जरीपटका, नागपुर.



## आज के युग में नारी की स्थिति

कु. चाँदनी पाण्डेय

बी.ए. - प्रथम वर्ष

आम बोलचाल में 'लेडिज फर्स्ट' एक कथन है। जो नारी के लिए सम्मान स्वरूप है। इतिहास साक्षी है, सिंधुघाटी की सभ्यता हो या पौराणिक कथाएँ हर जगह नारी को श्रेष्ठ कहा जाता है।

“यत्र नार्यस्तु, रमन्ते तत्र देवता” वाले भारत देश में आज नारी ने अपनी योग्यता के आधार पर अपनी श्रेष्ठता का परिचय हर क्षेत्र में अंकित कर रही है। लेकिन क्या यही है। लेडिज फर्स्ट का सही अर्थ। या फिर यह केवल औपचारिकता मात्र है।

अक्सर नारियों कन्या भ्रूण हत्या, दहेज जैसी विषैली मानसिकता का शिकार होना पड़ता है। नारी की बढ़ती प्रगति को भी यदा - फदा पुरुष के अहं का कोप भाजन बनना पड़ता है।

आज की नारी शिक्षित और आत्मनिर्भर है। प्रेमचंद युग में नारी की नई चेतना का उदय हुआ। अनेक शताब्दियों के पश्चात राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने स्त्री के अमूल्य महत्व को पहचाना और प्रसादजी ने उन्हें मातृशक्ति के आसन पर आसीन किया। जो उसका प्राकृतिक अधिकार था।

आजादी के बाद से नारी के हित में कई कानून बनाए गये। नारी को लाभान्वित करने के लिए नई योजनाओं का आगास हो रहा है। उनकी सुरक्षा का ध्यान रखकर कठोर कानून बनाए गए इसके बावजूद समाज के कई हिस्से में दंड का कोई खौफ नहीं है और नारी की पहचान को कुंठित मानसिकता का शिकार होना पड़ रहा है।

श्रद्धाओं वाले देश में नारी का अस्तित्व तार-तार हो रहा है। तो आइए सब मिलकर एक संकल्प लें।

“नारी का करो सम्मान,  
तभी बनेगा देश महान”

“अपने कर्तव्यों संग नारी भर रही है, अब उड़ान  
ना है कोई शिकायत  
ना है कोई थकान।

यही है नारी की पहचान।”





## औरत

कु. नेहा कुमार  
एम.ए. - प्रथम वर्ष

भारत एक ऐसा देश है। जहाँ औरत को देवी के रूप में पूजा जाता है। दीवाली में लक्ष्मी तो नवरात्री में दुर्गा माँ के रूप में एक औरत को ही पूजा जाता है। रक्षाबंधन, तीज, करवाचौथ जैसे त्योहार भी औरत के बिना अधूरे हैं। यहाँ तक कि सबसे पवित्र जल गंगाजल को भी गंगा माँ से संबोधित किया जाता है। पृथ्वी को भी धरती माँ से संबोधित किया जाता है। याने की एक औरत। लेकिन वही दूसरी तरफ इस महान भारत देश के पुरुष औरत को सबसे नीचा बताने और उनकी बेइज्जती करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ते। कई पुरुषों को गुस्से में अपने मन की भड़ास निकालनी हो किसी से झगड़ना हो या बेइज्जत करना तो औरत! क्या औरत इतनी तुच्छ है? जिसे गाली देकर मन की भड़ास निकालने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। जिस देश में एक तरफ औरत को देवी कह कर इज्जत दी जाती है उसी देश और समाज में औरतों का रेप होता है और कई गुनहगारों को सजा तक नहीं दी जाती है। वहाँ पर गालियों को लेकर क्या किया जाएगा अगर पुरुष मिल कर इस बदलाव को गंभीर हो कर कुछ करेंगे तो शायद कुछ बदलाव आ सके।



नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो  
विश्वास रजत नग पगतल में।  
पीयूष स्रोत सी बहा करो  
जीवन के सुन्दर समतल में। — जयशंकर प्रसाद  
नारी सहनशक्ति की साक्षात् प्रतिमूर्ति, धैर्य का अवतार होती है।  
— महात्मा गांधी  
नारी नर की सहचरी, उसके धर्म की रक्षक, उसकी गृहलक्ष्मी तथा  
उसे देवत्व तक पहुँचाने वाली साधिका है। — डॉ राधाकृष्णन्



## कम्प्यूटर का प्रयोग समस्या एवं समाधान

कु. प्राची जांभुलकर

बी.ए - प्रथम वर्ष

वर्तमान युग यदि कम्प्यूटर कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। आनेवाले कुछ वर्षों में कम्प्यूटर प्रत्येक घर में टी.वी. की तरह ही दिखाई देगा। क्योंकि किसी का भी काम कम्प्यूटर के बिना चलने वाला नहीं है। जीवन के हर क्षेत्र में कम्प्यूटर की घुस पैठ हो गई है। व्यवसाय, नौकरी, उद्योग, व्यापार, बीमा बैंक, रेल, हवाई यातायात, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, शिक्षा, प्रबंधन सूचना तकनीक सर्वत्र कम्प्यूटर का बोलबाला है। सच तो यह है कि कम्प्यूटर अब आम जरूरत की चीज बन गई है।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया कम्प्यूटरों के उपयोग से जुड़ी हुई है। कम्प्यूटर के आविष्कार ने वैज्ञानिक प्रगति को एक नई दिशा दी है। विविध क्षेत्रों में विज्ञान एवं तकनीक ने जो आशातील उन्नति की है उसका पूरा श्रेय कम्प्यूटर को है। मोटे तौर पर कम्प्यूटर को वैज्ञानिक ढंग से विकसित यांत्रिक बुद्धि कहा जा सकता है। मानव शरीर में मस्तिष्क जो कार्य निष्पादित करता है, वही कार्य कम्प्यूटर का है। यही नहीं अपितु मस्तिष्क को काम करने में जितना समय लगता है, कम्प्यूटर उससे कम समय में बिना कोई गलती किए हुए वही कार्य संपन्न कर देता है। ६ या ७ अंकोवाली संख्याओं के जोड़, बाकी, गुणा, भाग वर्गमूल आदि करने में “कैलकुलेटर” एक सेंकड का भी समय नहीं लेता जबकि मस्तिष्क इसे हल करने में कई मिनट का समय लेगा।

“चार्ल्स बेबेज” ने १९ वीं शताब्दी के प्रारंभ में सर्वप्रथम पहला कम्प्यूटर निर्मित किया जो लंबी-लंबी गणनाएं करके उसके परिणामों को मुद्रित भी कर सकता है। आज कम्प्यूटर का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा रहा है। बैंकिंग क्षेत्र में यह हिसाब किताब रखने का काम करता है। सूचना एवं समाचार प्रेषण के क्षेत्र में तो कम्प्यूटर प्रयोग से एक क्रांति भी आ गई है। दूर संचार की दृष्टि से भी वे अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। विज्ञान एवं तकनीक के अनुसंधान क्षेत्र

में परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्षता विज्ञान जैसे क्षेत्रों में कम्प्यूटरों ने उपयोग में नई जानकारीयों प्रदान की है।

औद्योगिक क्षेत्र में भी कम्प्यूटर का प्रयोग विविध रूपों में होने लगा है। कम्प्यूटर का अति विकसित रूप यंत्र मानव या रोबोट है। जो ऐसे स्थानों पर काम करने में सक्षम है जहाँ मानव के जीवन को खतरा है। रेल की आरक्षण खिड़कियों पर अब कम्प्यूटर लग गए हैं। मौसम विज्ञान की भविष्यवाणियों में भी इनसे सहायता ली जा रही है। युद्ध एवं शांति दोनों में ही कम्प्यूटरों की विशेष भूमिका है। कम्प्यूटरों का उपयोग वर्तमान काल की मूलभूत आवश्यकता है कुछ लोग भले ही इस आधार पर कम्प्यूटर का विरोध करे कि इस प्रक्रिया से देश में बेरोजगारी बढ़ेगी किंतु यह सच नहीं है। विकसित विश्व के साथ यदि हमें कदम से कदम मिलाकर चलना है तो कम्प्यूटरों को घर-घर तक पहुँचना होगा।

कम्प्यूटर के नेटवर्क को इंटरनेट कहा जाता है। इंटरनेट से जुड़े कम्प्यूटर से सूचना ले सकने की सुविधा प्राप्त होती है। इस प्रकार सभी देशों के इंटरनेट सुविधा के द्वारा पारस्परिक सूचनाओं एवं आंकड़ों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। इंटरनेट के द्वारा ईमेल भी प्राप्त की जा सकती है तथा अलग-अलग स्थानों पर बैठे लोग आपस में 'वीडियो कॉन्फ्रेंस' भी कर सकते हैं। इंटरनेट ने दुनिया को एक परिवार बना दिया है। विश्व के किसी भी हिस्से में होनेवाली गतिविधि को अब इंटरनेट के जरिए कहीं भी पहुंचाया जा सकता है। इंटरनेट पर समाचार पत्र भी उपलब्ध है। तथा सूचनाओं का अथाह भंडार विभिन्न वेबसाइट पर प्राप्त है।

कम्प्यूटर के विकास से सूचना प्रौद्योगिकी को नए आयाम दिए हैं। संचार उपग्रह बिना कम्प्यूटर के काम नहीं कर सकते। मोबाइल फोन, सेटेलाइट फोन जैसी सुविधाएं इन्हीं संचार उपग्रहों से ही संभव हो सकी है। कम्प्यूटर का प्राण तत्व है। माइक्रोचिप्स पर अंकित सूचनाएँ यह इसका 'सॉफ्टवेयर' है। हम गर्व के साथ यह कह सकते हैं कि आज भारत कम्प्यूटरों के सॉफ्टवेयर निर्माण में विश्व के अग्रणी देशों में से एक है। भारत इस क्षेत्र में निर्यात करके भारी विदेशी मुद्रा कमा रहा है। 'कम्प्यूटर प्रोग्रामर' एवं इस विषय के जानकार लोग प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं जिनकी विदेशों में भारी माँग है।



कम्प्यूटर व्यवसाय ने लाखों लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं। कम्प्यूटर का निर्माण भी मानव मस्तिष्क ने ही किया है। अतः यह व्यवहार में भले ही बुद्धि को पराजित कर दे, पर अंततः मानव बुद्धि का लोहा तो उसे मानना ही पड़ेगा। कम्प्यूटर और चाहे जो कुछ भी कर ले पूरे मानवीय अनुभूतियों, संवेदनाओं विवेक चिन्तन का स्रोत नहीं बन सकता यही मनुष्य की विशेषता है जो उसे यंत्र से अलग करती है कुछ भी हो हमें कम्प्यूटरों के प्रयोग से निराश नहीं होना चाहिए अपितु इसका आवश्यकतानुसार प्रयोग करना चाहिए।

आजकल विश्वभर में कम्प्यूटर का युग चल रहा है। चारों ओर इसी का शोर है। उसके नाम और काम से आम आदमी भी प्रभावित हो रहा है। अब कम्प्यूटर ने आधुनिक वैज्ञानिक क्रांति में केंद्रीय स्थान ग्रहण कर लिया है। वह मनुष्य के मस्तिष्क के समकक्ष बनते जा रहा है। उसमें इलेक्ट्रॉनिक पद्धति से निर्मित एक 'स्मरणशक्ति' की व्यवस्था रहती है। इससे वह अत्यंत पेचीदे सवाल भी हल कर सकता है। वह अन्य यंत्रों को नियंत्रित कर सकता है। उन्हें निर्देशित ढंग से संचालित कर सकता है। कम्प्यूटर के सहारे अंतरिक्ष का अध्ययन तथा रॉकेट, उपग्रह का अवकाश में प्रक्षेपण आदि किया जाता है। हमारे देश में शिक्षा के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर कम्प्यूटर का उपयोग किया जा रहा है। शिक्षा के प्रसार में यह काफी उपयोगी सिद्ध हुआ है।

हमारे देश के सरकारी तथा गैरसरकारी संस्थानों में कम्प्यूटर का पदार्पण हो चुका है। जहाँ कम्प्यूटर नहीं पहुँचा है, वहाँ लोग उसके स्वागत के लिए अधीर हो उठे हैं। कम्प्यूटर से काम में चुस्ती और फूर्ती आती है। एक कम्प्यूटर अनेक व्यक्तियों का काम कर लेते हैं। वह मनुष्यों जैसी त्रुटियाँ नहीं करता। कम्प्यूटर कविताएँ लिख सकता है, संगीत रचना कर सकता है। सही-सही जन्मकुंडली बना सकता है। रोबोट (यंत्रमानव) कम्प्यूटर क्रांति की ही देन है। वह मनुष्य के लिए असंभव काम भी कर सकता है। उसके कार्य आश्चर्यजनक होते हैं। विकसित देशों में उसके चमत्कार देखने योग्य होते हैं। जापानी यंत्रमानव मनुष्यों की तरह वाद्ययंत्र बना सकता है। एक अमेरिकी महिला ने यंत्रमानव से शोधप्रबंध लिखवाने में सफलता प्राप्त की है।

बैंकों में बड़े पैमाने पर कम्प्यूटरों का इस्तेमाल किया जा रहा है। इससे बैंकों के कामकाज में बहुत तेजी आई है। इससे खाता धारकों को काफी सुविधा हुई है। आजकल प्रकाशन के क्षेत्र में कम्प्यूटर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। कम्प्यूटर ने कंपोजिंग कार्य अत्याधिक सरल कर दिया है।



कम्प्यूटर का उपयोग अस्पतालों में चिकित्सा से संबंधित विभिन्न कार्यों के लिए किया जा रहा है। रेल विभाग के लिए कम्प्यूटर वरदान साबित हुआ है। स्टेशनों पर टिकट देने तथा टिकटों को आरक्षित करने का सारा काम कम्प्यूटरों के माध्यम से किया जा रहा है। इससे देश के किसी हिस्से से किसी भी रेलगाड़ी की टिकट आरक्षित कराया जा सकता है। इससे रेल कार्यालय क्या यात्रियों दोनों का कार्य आसान हो गया है।

आजकल अधिकांश कार्यालयों में कम्प्यूटर से अनेक तरह के काम किए जा रहे हैं। इंटरनेट से हर प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा रही है। कम्प्यूटर का उपयोग ज्योतिषशास्त्र में भी किया जा रहा है। आजकल जगह-जगह जन्मपत्री बनाने की दूकानें खुल गई हैं। यहाँ कम्प्यूटर के द्वारा जन्मपत्री बनाई जाती है और शादी-ब्याह की तिथियाँ बताई जाती हैं। आज कम्प्यूटर का जमाना है। कम्प्यूटर हर क्षेत्र में अपनी उपयोगिता साबित कर रहा है। कम्प्यूटर के विशेषज्ञ आज तरह-तरह के प्रोग्राम बनाने में लगे हुए हैं।

इस तरह कम्प्यूटर मनुष्य के लिए वरदान साबित हुआ है। तभी हम इक्कीसवीं सदी में मजबूती से अपने पैर जमा सकेंगे।



## सिनेमा एवं हिंदी

कु. रेनी सिंह

एम.ए - प्रथम वर्ष

भारत विश्व का एक अद्भुत देश है। जहाँ बहुजातीय बहुभाषीय और बहुधर्म मानव समुदाय परस्पर प्रेम-मिलाप और सौहार्द से मिलजुल कर रहते हुए एक गौरवशाली राष्ट्र का निर्माण करते हैं। मिली-जुली सामाजिक संस्कृति की संवाहक भी है। अनेक भाषा होने के बावजूद भी हर भारतवासी, प्रत्येक भाषा का सम्मान करता है, जितना सम्मान वह अपनी मातृभाषा से करता है। सभी भाषाओं में हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है, जो उत्तर से लेकर कश्मीर तक, सुदूर दक्षिण में कन्याकुमारी तक पूर्व में कामाख्या से लेकर पश्चिम में कछा तक बोली और समझी जाती है यह गौरव का विषय है कि हिंदी आज भारत की सीमा लांघकर विश्व के हर कोने तक जा पहुँची है। विश्व के करीब 9६२ देशों में हिंदी न केवल पढ़ाई जा रही है, बल्कि शान से बोली भी जा रही है। इस व्यापकता के पीछे अन्य कारकों के अलावा सिनेमा भी एक कारक है जिसके माध्यम से हिंदी विश्व में सिरमौर बन पायी है।

भारत की गौरवशाली परम्परा, उसका स्वर्णिम इतिहास और सामाजिक संस्कृति की अनुगुंज विश्व के कोने-कोने में हिंदी के माध्यम से प्रसारित प्रचारित करने में भारतीय सिनेमा के योगदान को कैसे विस्तृत किया जा सकता है? भारत के पहले प्रधानमंत्री स्व. जवाहरलाल नेहरू के परामर्श को शिरोधार्य करते हुए उस दशक के जादुई करिश्मा के धनी और अपने समय के सबसे बड़े स्टार निदेशक राजकपूर ने “श्री ४२०” का निर्माण किया था उस फिल्म में एक गाना था -



“मेरा जूता है जापानी,  
पतलून इंग्लिशतानी,  
सिर पर लाल टोपी रूसी,  
फिर भी दिल है हिंदुस्तानी”

आज भी रूस में लोग बड़े चाव के साथ गाने-नाचते देखे जा सकते हैं। सिनेमा अपनी प्रारम्भिक अवस्था से ही भारतीय समाज का आइना रहा है। भारतीय सिनेमा ने पिछले पांच-सात दशक पूर्व से ही शहरी दर्शकों के साथ-साथ सुदूर ग्रामीण अंचलो तक गहरे तक प्रभावित किया और आज भी अपना प्रभाव बनाए हुए है। टेलिविजन के आश्चर्यजनक खोज के साथ ही उसने समूचे विश्व में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया है। इसी क्रम में आज भारत के गांव कस्बो तक के सामान्य परिवारों के बीच इसकी पहुँच हो गई है। बुद्धिवक्सा कहलाय जाने वाले इस टेलीविजन के माध्यम से हिंदी फिल्में तथा हिंदी गाने धमाल मचा रहे हैं, आज हिंदी की व्यापक लोकप्रियता और इसे संप्रेषण के माध्यम के रूप में मिली आत्मस्वीकृति किसी सवैधानिक प्रावधान या सरकारी दबाव का परिणाम नहीं है। मनोरंजन और फिल्म की दुनिया ने इसे व्यापार और आर्थिक लाभ की भाषा के रूप में जिस विस्मयकारी ढंग से स्थापित किया है वह लाजवाब है। विकास योजनाओं के संबंध में जन शिक्षण का दायित्व भी भली भाँति निभाती है घटना चक्रों और समाचारों का जहाँ वह गहन विश्लेषण करती है तथा वस्तु की प्रकृति के अनुकूल विज्ञापन की रचना करे उपभोक्ताओं को उसकी अपनी भाषा में बाजार से चुनाव की सुविधा मुहैया कराती है। आज हिंदी इन्ही संचार माध्यमों के सहारे अपनी संप्रेषण क्षमता का बहुमुखी विकास कर रही है।

जब हम भारतीय सिनेमा का मूल्यांकन करते हैं तो पाते हैं कि भाषा का प्रचार-प्रसार, साहित्यिक कृतियों का फिल्मी रूपांतरण, हिंदी गीतों की लोकप्रियता, हिंदी की अन्य उपभाषाएं/बोलियों का सिनेमा और सांस्कृतिक एवं जातीय प्रश्नों को उभारने में भारतीय सिनेमा का योगदान जैसे मुद्दे महत्वपूर्ण ढंग से हमारे सामने आते हैं। सिनेमा ने हिंदी भाषा की संचारात्मकता, शैली कथनबिंब धार्मिता, प्रतीकात्मकता, दृश्य विधान आदि मानकों को गड़ा है। आज भारतीय सिनेमा हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति का लोकदूत बनकर चहुँ ओर पहुँचने की दिशा में अग्रसर हैं। भारतीय सिनेमा के अपने शैशवकाल में जितनी भी फिल्में बनी उनमें भारतीय संस्कृति की महक रची बसी होती थी। उन्नीसवीं सदी के पांचवे-छठवें दशक में अपने समय के सबसे चर्चित कलाकार साहू मोड़क, मनोहर देसाई, पृथ्वीराज, भगवान, भारतभूषण, अशोककुमार, राजकपूर, बलराज साहनी, शम्मीकपूर, शशिकपूर, गुलजार आदि हैं।

महिला कलाकारों में सुरैया, निरुपा राय, कामिनी कौशल, मधुबाला, नरगिस, नूतन,

मालासिन्हा, आशा पारेख, शर्मिला टैगोर, राखी आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। इन कलाकारों ने अपने शानदार अभिनय के बल पर अनेकानेक पारिवारिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक फिल्मों की ओर इन्हें यादगार फिल्मों की श्रेणी में लाकर खड़ा किया। कवि प्रदीप, कमाल अमरोही, आदि जैसे सिद्ध हस्त कवियों ने देशभक्ति सहित अनेकानेक गीतों की रचनाएं की भले ही आज वे फिल्में इतिहास की वस्तु बनकर रह गई हों लेकिन उन फिल्मों के नायक-नायिकाओं को आज भी याद किया जाता है और उन तमाम गानों को लोग आज भी भूले नहीं है। भूले बिसरे गीत के माध्यम से आकाशवाणी आज भी इन गीतों को प्राथमिकता के आधार पर रोज प्रस्तुति दे रहा है। ये सारे कलाकार/संगीतकार, लेखक/कवि, जिसे आज की पीढ़ी भले ही न जानती हो, लेकिन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से उन्हें पढ़ती और याद करती है।

आज भारतीय सिनेमा में जीवनभर की उपलब्धियों पर जो सबसे बड़ा पुरस्कार है वह दादा साहेब फालके पुरस्कार ही हैं। यह भारतरत्न जैसा है। संस्कृति के इतिहासविदों के लिए यह फालके की अंतिम विरासत है, तो अन्य लोगों के लिए लोकप्रिय भारतीय दृश्य कला की शुरूआत। फिल्में तो आज भी बड़ी संख्या में बन रही है लेकिन उनमें पारिवारिकता, देशभक्ति के जज़्बात आदि का दूर-दूर तक वास्तव नहीं रहा। हिंदी के अलावा और भी अन्य भारतीय भाषाओं में फिल्में बनाई गई लेकिन हिन्दी की लोकप्रियता का ग्राफ इन सबसे ऊपर रहा। जिसकी प्रसिद्धि विश्व के कोने-कोने में फैलती चली गई। पाकिस्तान की फिरकापरस्ती के चलते वहां हिंदुस्तानी फिल्मों को न तो वहाँ दिखाया जाता है और न ही उनके गानों को सुनने दिया जाता है। दृश्य और श्राव्य दोनों पर प्रतिबंध के बावजूद इसके लोग भारतीय सिनेमा और फिल्मी गाने के दिवाने बड़ी संख्या में देखे जा सकते हैं।

आज फिल्मों के माध्यम से हिंदी को वैश्विक स्तर पर सम्मान प्राप्त हो रहा है हमारे फिल्मकार भारत ही नहीं यूरोप, अमेरिका और खाड़ी देहों के अपने दर्शकों को ध्यान में रखकर फिल्मों का निर्माण कर रहे हैं। यह गौरव का विषय है कि हमारी फिल्में आस्कर-अवार्ड तक अपनी पहुँच बना रही है। समूचे विश्व को और ज्यादा निकट लाने के लिए निश्चित ही इस क्षेत्र में आज भी बेहतर ढंग से काम किए जाने की आवश्यकता है। संचार माध्यम का योगदान इसमें लिया जा सकता है। फिल्मों में मनोरंजन और अर्थ उत्पादन के साथ-साथ इनकी सार्थकता का भी ध्यान रखा

जाए जो हिंदी सिनेमा सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम सिद्ध हो सकता है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि सिनेमा ने हिंदी की लोकप्रियता में जहाँ चार चांद लगाए हैं। वही उसकी व्यवहारिकता को भी बढ़ाया है।

ग्लोबल होती इस दुनिया में मोबाईल और कंप्यूटर की संचार क्रांति ने हिंदी को विश्व की सिरमौर भाषा बना दिया है शायद आपको याद होगा कि अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा ने अमेरिका नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा था कि वे जितनी जल्दी हो सके हिंदी सीखें अन्यथा सारे कामकाज हिंदुस्तानी हथिया लेंगे। लेकिन दुर्भाग्य कि हम हिंदी के बढ़ते महत्व को भली भ्रांती समझ नहीं पा रहे हैं यह भूल कोई छोटी सी भूल नहीं है। अगर यह कम जारी रहा तो संभव है कि हमें इसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

अतः हमें हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देते हुए हिंदी भाषा के प्रयोग को दैनंदिन जीवन में बढ़ाना चाहिए।



- ✦ जीवन से प्यार करना एक डॉक्टर ही सीखा देता है।
- ✦ राजनीति एक खूबसूरत कला है।
- ✦ मेरा मुल्क ही मेरी जान है इसकी रक्षा करना मेरी शान है।
- ✦ मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।
- ✦ शिवबा स्वराज्याची स्थापना करा।

## संचार माध्यम में हिन्दी

कु. अंजली राईकर

बी.कॉम. -प्रथम वर्ष

संचार माध्यम से आशय है संदेश के प्रवाह में प्रयुक्त किए जाने वाले माध्यम । संचार माध्यमों के विकास के पीछे मुख्य कारण मानव की जिज्ञासु प्रवृत्ति का होना वर्तमान समय में संचार माध्यम और समाज में गहरा संबंध एवं निकटता है। इसके द्वारा जन सामान्य की रुचि एवं हितों को स्पष्ट किया जाता है। संचार माध्यमों ने ही सूचना को सर्वसुलभ कराया है। तकनीकी विकास से संचार माध्यम भी विकसित हुए हैं तथा इससे संचार अब ग्लोबल फेनोमेनो बन गया है।

संचार माध्यम, अभिप्राय होता है दो बिंदुओं को जोड़ने वाला, संचार माध्यम ही संप्रेषक और श्रोता को परस्पर जोड़ते हैं। हेराल्ड लॉसेल के अनुसार, संचार माध्यम के मुख्य कार्य-सूचना संग्रह एवं प्रसार, सूचना विश्लेषण, सामाजिक मूल्य एवं ज्ञान का संप्रेषण तथा लोगों का मनोरंजन करना है।

संचार माध्यम का प्रभाव समाज में अनादिकाल से ही रहा है। परंपरागत एवं आधुनिक संचार माध्यम समाज की विकास प्रक्रिया से ही जुड़े हुए हैं। संचार माध्यम का श्रोता अथवा लक्ष्य समूह बिखरा होता है। इसके संदेश भी अस्थिर स्वभाव वाले होते हैं। फिर संचार माध्यम ही संचार प्रक्रिया को अंजाम तक पहुँचाते हैं।

संचार - संचार शब्द अंग्रेजी के कम्युनिकेशन का हिन्दी रूपांतर है जो लैटिन शब्द कम्युनिस से बना है, जिसका अर्थ है - सामान्य भागीदारी युक्त सूचना। अतः हम समाज के परिप्रेक्ष्य से देखें तो पाते हैं कि सामाजिक संबंधों को दिशा देने अथवा निरंतर प्रवाह मान बनाए रखने की प्रक्रिया ही संचार है। संचार समाज के आरंभ से लेकर अब तक के विकास से जुड़ा हुआ है।

प्रसिद्ध संचारवेत्ता डेविस मैक्वेल के अनुसार “संचार एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेशों का आदान प्रदान है।

डॉ. मरी के मत में, “संचार सामाजिक उपकरण का सामंजस्य है।” लीगैन्स की शब्दों में, “संचार निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया निरंतर अन्तक्रिया से चलती रहती है और इसमें अनुभवों की साझेदारी होती है।”

राजनीति शास्त्र विचारक लुकिव पाई के विचार में, “सामाजिक प्रक्रियाओं का विश्लेषण ही संचार है।” इस प्रकार संचार के संबंध में कह सकते हैं कि इसमें समाज मुख्य केन्द्र होता है जहाँ संचार की प्रक्रिया घटित होती है। संचार की प्रक्रिया को किसी दायरे में बांधा नहीं जा सकता। फिर संचार का लक्ष्य ही होता है—सूचनात्मक, प्रेरणात्मक, शिक्षात्मक व मनोरंजनात्मक।

संचार माध्यमों की प्रकृति - भारत में प्राचीन काल से ही संचार माध्यमों का अस्तित्व रहा है। यह अलग बात है कि उनका रूप अलग-अलग होता था। भारत में संचार सिद्धांत काव्य परंपरा से जुड़ा हुआ है। साधारणीकरण और स्थायी भाव संचार सिद्धांत से ही जुड़े हुए हैं। संचार मुख्य रूप से संदेश की प्रकृति पर निर्भर करता है। फिर जहाँ तक संचार माध्यमों की प्रकृति का सवाल है तो वह संचार के उपयोगकर्ता के साथ-साथ समाज से भी जुड़ा होता है। चूंकि हम यह भी पाते हैं कि संचार माध्यम समाज की भीतर की प्रक्रियाओं को ही उभारते हैं। निवर्तमान शताब्दी में भारत के संचार माध्यमों की प्रकृति व चरित्र में बदलाव भी हुए हैं लेकिन प्रेस के चरित्र में मुख्यतः तीन-चार गुणात्मक परिवर्तन दिखाई देते हैं।

पहला :-शताब्दी के पूर्वाध्व में इसका चरित्र मूलतः मिशनवादी रहा, वजह थी स्वतंत्रता आंदोलन व औपनिवेशिक शासन से मुक्ति। इसके चरित्र के निर्माण में तिलक, गांधी, माखनलाल चतुर्वेदी, विष्णु परडकर, माधवराव सत्पे जैसे व्यक्तित्व ने योगदान किया था।

दूसरा :- १५ अगस्त १९४७ के बाद राष्ट्र के एजेंडे पर नई प्राथमिकताओं का उभरना। यहाँ से राष्ट्र निर्माण काल आरंभ हुआ और प्रेस भी इसके संस्कारों से प्रभावित हुआ। यह दौर दो दशकों तक चला।

तीसरा :- सातवें दशक से विशुद्ध व्यावसायिक कला की संस्कृति आरंभ हुई। वजह थी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं का विस्फोट।

चौथा :- अन्तिम दो दशकों में प्रेस का आधुनिकीकरण हुआ, क्षेत्रीय प्रेस का एक ‘शक्ति’ के रूप में उभरना और पत्र-पत्रिकाओं से संवेदनशील एवं दृष्टि का विलुप्त होना।



इसके अलावा आज तो संचार माध्यमों की प्रकृति अस्थायी है। इसके अपने वाजिब कारण भी हैं हालांकि इसके अलावा अन्य मकसद से भी संचार माध्यम बेतुकी खबरें व सूचनाएँ, सनसनी खेज तरीके से परोसन लगे हैं।

संचार माध्यम का महत्व :- किसी भी सूचना, विचार या भाव को दूसरों तक पहुँचना ही मोटे तौर पर संचार या कम्युनिकेशन कहलाता है। एक साथ लाखों-करोड़ों, लोगों तक एक सूचना को पहुँचाना ही संचार या जनसंचार या मास कम्युनिकेशन मीडिया कहलाता है। मानव सभ्यता के विकास में संचार की महत्वपूर्ण भूमिका रहा है वैसे तो सभ्यता के विकास के साथ ही मनुष्य किसी न किसी रूप में संचार करता रहा है। जब आज की तरह टेलीफोन, इंटरनेट आदि की सुविधाएँ नहीं थी, तब लोग चिट्ठी लिख कर अपना हाल समाचार लोगों को चिट्ठी लिखकर, अपना हाल समाचार लोगों तक पहुँचाते और दूसरे का समाचार जानते थे। आपको यह जान कर हैरानी होगी की चिट्ठी लिखने का प्रचलन भी बहुत पुराना नहीं है। जब तक व्यवस्था नहीं थी तब लोग संदेश भेजने वालों जिन्हें संवादिया कहा जाता था। एक गांव से दूसरे गांव तक संदेश भेजते या मांगते थे।

पुराने समय में राजा के हरकारे पैदल या घोड़े की सवारी करते हुए राजा के संदेश राजधानी से दूसरी जगहों पर ले जाते और वहाँ से ले जाते थे। आपने यह भी कई कहानियों में सुना होगा कि लोग कबूतरों के जरिए अपना संदेश भेजा करते थे यही व्यवस्था बाद में एक सरकारी विभाग डाक-विभाग बनाकर सबके लिए सुलभ कर दी गई थी।



## वृद्धाश्रम और अनाथाश्रम में बिताए पल

कु. श्रद्धा शर्मा  
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

हाल ही में हम लोग अपने विद्यालय की ओर से वृद्धाश्रम और अनाथाश्रम गए थे। हमारे विद्यालय की ओर से दान के रूप में विद्यालय के हर छात्र ने एक किलो फल दान के रूप में दिए थे। हम बस में बैठकर आधे घंटे में आश्रम पहुँच गए। जब हम आश्रम में पहुँचे तो मेरा दिल थोड़ा घबराने लगा क्योंकि जैसे ही हम अंदर पहुँचे तो वहाँ का सौंदर्य अचानक से बदल गया। वहाँ कुछ अलग ही परिवर्तन आ गया। वहाँ की हवा एकदम अलग थी, एकदम शांति। फिर मैंने अपने आप को संभाला और बस उतर गया, उतरते समय मैंने उनको भेट के रूप में देने के लिए कुछ फल और मिठाइयाँ साथ लिए। सबसे पहले हम अनाथ आश्रम गए, वहाँ पर हमें बताया गया कि यहाँ पर अनाथ बच्चों को रखा जाता है, उनका पालन पोषण किया जाता और उन्हें पढ़ाया भी जाता। यह बात सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई कि उन्हें पढ़ाया जाता है। वहाँ पर उन बच्चों को रखा जाता है जो चल नहीं सकते, बोल नहीं सकते, सुन नहीं सकते और उन लोगों का इलाज करवाया जाता और पढ़ाया भी जाता है। यह अनाथाश्रम बाकि अनाथाश्रमों से बहुत अलग था क्योंकि यहाँ पर आम विद्यालय जैसे ही कार्य होते थे, उनके साथ वही सब व्यवहार किया जाता है जो आम बच्चों के साथ किए जाते हैं। उनकी चाह के अनुसार सारी चीजें मंगवाई जाती, उनकी जरूरत की सारी चीजें थी, पढ़ाई के लिए एक से लेकर दस तक कक्षा, शरीर को तंदुरुस्त रखने के लिए जिमखाना, पढ़ाई के साथ-साथ वहाँ अन्य कार्यक्रम भी होते थे, हम ने देखा कि कैसे बच्चों ने पुरस्कार जीते। पढ़ाई के साथ-साथ वहाँ पर अन्य कार्य भी करवाएँ जाते थे जैसे नाच-गाना, खेल, सिलाई। वहाँ पर जो लोग पढ़ाई में अच्छे नहीं थे वे बाकि कार्यों में डिग्री हासिल कर रहे थे, वहाँ पर मेरी एक भैया से मुलाकात हुई जिन्होंने डिग्री हासिल की थी, उनका नाम अमित है, मैंने उनसे उनके बारे में पूछा कि वह इधर क्यों आए तो उन्होंने बताया कि उनके माता-पिता ने उन्हें यहाँ भेज दिया क्योंकि उनके

माता-पिता को लगा कि अमित उनके लिए बोझ है। इस बात को गलत साबित करने के लिए अमित ने कड़ी मेहनत करके डिग्री हासिल की। उनकी दुख भरी कहानी सुनकर डिग्री आँखें भर आई। मैंने उनको अपने हाथों से मिठाई खिलाई और उन्हें शुभकामनाएँ भी दी यह सब देखने के बाद मेरा दिल पिघल गया।

इसके बाद हम लोग वृद्धाश्रम गए, वहाँ पर वे लोग अपनी जिंदगी के आखरी पल जी रहे थे, वहाँ पर हम ज्यादा देर नहीं रुके। हम सब ने उन लोगों को नमस्ते कहा और आगे चले गए, फिर मैं एक दादी जी के पास रुका, मैंने देखा कि वह दादी कुर्सी बना रही थी, मैंने उनसे उनके बारे में पूछा, उन्होंने बताया कि वह एक मेले में खो गई थी और तभी से लेकर आज तक वह अपने माता-पिता से नहीं मिली। वहाँ पर कुछ लोग ऐसे भी थे जो बचपन से वहाँ पर थे। इन सबको देखने के बाद हम लोग वापस जाने की तैयारी ही कर रहे थे कि, जाते-जाते मेरे दिमाग में ख्याल आने लगा कि इन लोगों की कुछ दुनिया ही नहीं, सारा दिन एक जगह पर रहना, बीमारी के कारण चल नहीं सकते, उनके कोई माता-पिता ही नहीं कि बाहरी दुनिया में फिर भी इन लोगों ने हार नहीं मानी। इनको देखकर मुझे एक कविता याद आई-

‘यू ही चला चल राही यू ही चला चल राही  
कितनी हसीन है यह दुनिया’  
‘आँसू की नदियाँ भी है खुशियाँ की बगिया भी है,  
फिर भी हसीन है यह दुनिया।।’



## सफलता का मंत्र

कु. ज्योती गुप्ता  
बी.ए. - प्रथम वर्ष

‘लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती’ यह पंक्तियाँ मनुष्य को जीने की नई राह दिखाती हैं। मनुष्य जीवन का दूसरा नाम संघर्ष हैं। जीवन में उसे हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इस संघर्ष में उसे अनेक बार हार का सामना भी करना पड़ता है जो कि निराशा को जन्म देती है। लेकिन मनुष्य इस हार को हार न मानकर जीत की नई राह समझे तो उसे जीवन में सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है। जो अलबर्ड ने कहा है ‘कभी हार न माने, तब तक कोशिश खत्म नहीं हो सकती जब तक उसे खत्म न समझा जाए। इसलिए कहा गया है कि ‘व्यक्ति हार जाने पर खत्म नहीं होता परन्तु तब खत्म होता है जब वह हार मान लेता है। मानव इतिहास में यदि हम देखें तो हम पाएँगे कि सफल व्यक्तियों में एक आम बात पाई गई है कि वे हार नहीं मानते। यदि वह हार मान लेते तो जीवन में कभी भी सफल नहीं होते। ‘मैं नहीं कर सकता’ कहना जीवन में रुक जाने के समान है। कोई भी परिस्थिती पूर्णतः निराशाजनक नहीं होती, निराशावादी लोग उसे निराशाजनक बनाते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए आशावादी सकारात्मक सोच जरूरी है। दृढ़ संकल्प तथा कुछ हासिल करने की चाह हमें सफलता के शिखर पर पहुंचा सकती है।



## मनुष्य की जीवन कथा

कु. जानवी रेंभुर्णे

बी.ए. -प्रथम वर्ष

मनुष्य का जीवन ८४ लाख वर्षों की कड़ी तपस्या व अच्छे गुण, अच्छे कार्य और पुण्य के वजह से मिलता है। मनुष्य का जीवन इस विशाल पृथ्वी पर एक छोटा सा नटखट, प्यारा और सबका राजदुलारा के रूप में होता है। जो न तो बोल सकता है और न तो चल सकता है। वह तो केवल एक छोटा सा फूल होता है एक बड़े से रेगिस्तान में एक तारा जैसे भरी आकाश में। जैसे-जैसे समय गुजरता है वह धीरे-धीरे चल पाता है, बोल पाता है। वह जैसे-जैसे बढ़ता है। वह विद्यालय जाने लगता है, पढ़ता है और जहाँ उसे उसी के तरह अनेकों विद्यार्थी के साथ रहना पड़ता है और कई विद्यार्थियों का सामना भी करना पड़ता है। इसी आयु में उसे दुनिया समझनी पड़ती है, दुनियादारी सीखनी पड़ती है। कई परेशानियाँ, मुश्किलें, कठिनाइयाँ आती हैं। परंतु धीरे-धीरे सब कुछ संभलता है। मानव अपनी इन परेशानियों से, मुश्किलों से उभरना चाहता है और धीरे-धीरे उससे उभरता भी है। जैसे जैसे बढ़ता है वह अपनी जिम्मेदारी समझता है और पूर्ण तरिके से उसे निभाता है। वह अपने जीवन में सच का साथ कभी नहीं त्यागता है भले ही कितनी भी बड़ी मुसिबतें आए। जैसे-जैसे धीरे-धीरे वह बूढ़ा होता है तो उसकी तरफ ध्यान देने वाला कोई भी नहीं रहता। कई लोग अपना जीवन, अपने सुख सब कुछ त्याग कर अपने परिवार को पूर्ण सुख संपत्ति प्रदान करता है। किसी को इसका फल मिलता है और किसी को नहीं। आयु के साथ मनुष्य का जीवन समाप्त हो जाता है और उस मनुष्य की याद के लिए उसकी तस्वीर पर हार चढ़ा दिया जाता और उस मनुष्य का इस पृथ्वी से संबंध टूट जाता है। जो रेगिस्तान में फूल के जैसा होता है परंतु जब वह मर जाता है उसी रेगिस्तान में उसे दफनाया जाता है फूलों के साथ।





## मीराबाई

कु. राधा अहिर  
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

कृष्णभक्ति शाखा की हिंदी की महान कवयित्री मीराबाई का जन्म संवत् १४६८ में राजस्थान के कुड़की (मेड़ता) नामक स्थान पर हुआ। इनके पिता का नाम रतनसिंह और माता का नाम वीरकुमारी था। मीराबाई बचपन से ही कृष्णभक्ति में रुचि लेने लगी थी। इनका विवाह उदयपुर के महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज जी के साथ हुआ।

विवाह के थोड़े दिनों के पश्चात ही उनके पति का स्वर्गवास हो गया। पति के परलोकवास के बाद इनकी भक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती गई। ये मंदिरों में जाकर वहाँ मौजूद कृष्णभक्तों के सामने कृष्णजी की मूर्ति के आगे नाचती रहती थी।

मीराबाई का कृष्णभक्ति में नाचना और गाना राज परिवार को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कई बार मीराबाई को विष देकर मारने की कोशिश की। घरवालों के इसप्रकार के व्यवहार से परेशान होकर वह द्वारका और वृंदावन चली गई। वह जहाँ जाती थी, वहाँ लोगो का सम्मान मिलता था। लोग उनको देवी के जैसे प्यार और सम्मान देते थे। इसी दौरान उन्होंने तुलसीदास को पत्र लिखा था :-

स्वस्ति श्री तुलसी कुलभूषण दूषण हरण गोसाईं।  
बारहि बार प्रणाम कर हूँ। अब हर हूँ सोक समुदाई॥  
घर के स्वजन हमारे जेते सबन्ह उपाधि घढाई।  
साधु साग अरु भजन करत माहि देत कलेस महाई॥  
मेरे माता-पिता के समहो, हरिभक्तन्ह सुखदाई।  
हमको कहा उचित करिबो हैं, सो लिखिए समझाई॥

मीराबाई के पत्र का जवाब तुलसीदास ने इस प्रकार दिया :-

जाके प्रिय न राम बैदेही।

सो नर तजिए कोटि बैरी सम जद्यपि परम सनेहा॥

नाते सबै राम के मनियत सुहमाद सुसंख्य जहाँ लौं।

अंजन कहा आँखि जो फूटे, बहुतक कहो कहां लौं॥

मीरा द्वारा रचित ग्रंथ : मीराबाई ने चार ग्रंथों की रचना की -

- i) बरसी का मायरा
- ii) गीत गोविंद टीका
- iii) राग गोविंद
- iv) राग सोरठ के पद

इसके अलावा मीराबाई के गीतों का संकलन “मीराबाई की पदावली” नामक ग्रन्थ में किया गया है। समझने के लिए उक्त पदावली का यह पद -

राम रतन धन पायो

पायो जी म्हेतो रामरतन धन पायो।

वस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा को अपणायो।

जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।

खरचै नहिं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सनपायो।

सत की नाव खेवहिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।

मीरा के प्रभु गिरधरनागर, हरख-हरख जस पायो।







## हरिवंशराय बच्चन

कु. शांती पटेल  
बी.कॉम. - प्रथम वर्ष

हरिवंशराय बच्चन का जन्म २७ नवंबर १९०७ में इलाहाबाद के पास प्रतापगढ़ जिले के एक छोटे से गाँव पट्टी में हुआ था, हरिवंश राय ने १९३८ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया व १९५२ तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवक्ता रहे।

१९२६ में हरिवंशराय की शादी श्यामा से हुई थी, जिनका टीबी की लंबी बीमारी के बाद १९३६ में निधन हो गया। इस बीच वे नितांत अकेले पड़ गए। १९४१ में बच्चन ने तेजी सूरी से शादी की।

१९५२ में पढ़ने के लिए वे इंग्लैंड चले गए। जहाँ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य (काव्य) पर शोध किया। १९५५ में कैम्ब्रिज से वापस आने के बाद वे भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ के रूप में नियुक्त हो गए।

हरिवंशराय बच्चन राज्यसभा के मनोनीत सदस्य भी रहे और १९७६ में इनको पद्मभूषण की उपाधि मिली। इससे पहले इनको दो चट्टानें (कविता संग्रह) के लिए १९६८ में साहित्य अकादमी का पुरस्कार भी मिला था। हरिवंश राय बच्चन का १८ जनवरी २००३ को मुंबई में निधन हो गया था।

बच्चन व्यक्तिवादी गीत, कविता तथा हालावादी काव्य के अग्रणी कवि हैं। अपनी काव्य यात्रा के आरंभिक दौर में वे 'उमर खैय्याम' के जीवन दर्शन से बहुत प्रभावित रहे और उनकी प्रसिद्ध कृति 'मधुशाला' उमर खैय्याम की रूबइयों से प्रेरित होकर ही लिखी गई थी, मधुशाला को मंच पर अत्यधिक प्रसिद्धी मिली और बच्चन काव्य प्रेमियों के लोकप्रिय कवि बन गए।



## यदि परीक्षाएँ न होती

कु. नेहा शर्मा

बी.ए. -प्रथम वर्ष

‘परीक्षा’ शब्द ही हमारे मन में एक प्रकार का भय पैदा कर देता है। प्राचीन काल से ही किसी न किसी रूप से परीक्षाएँ ली जाती रही है और भविष्य में भी ली जाती रहेंगी। आज तक कोई भी परीक्षा से बच नहीं पाया है। और नाही कभी कोई बच पाएगा। परंतु यह कल्पना बड़ी मनोरंजक है कि यदि परीक्षाएँ न होती, तो क्या होता....

यदि परीक्षाएँ न होती, तो अधिकतर विद्यार्थियों की खुशी की सीमा न रहती। उन्हें मन लगाकर पढ़ाई करने से छुटकारा मिल जाता। वर्ष के अंत में वे ऊपर की कक्षा में अपने आप चले जाते। इसलिए वे अपना अधिकांश समय गपशप में गँवा देते। खेल के मैदानों में, सिनेमाघरों आदि स्थलों में विद्यार्थियों की भीड़ बढ़ जाती। यदि परीक्षाएँ न होती, तो प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी विद्यार्थी नाराज और दुःखी हो जाते। दिन-रात अध्ययन करना, पुस्तकालयों में बैठकर पुस्तकों के पन्ने उलटना, शिक्षकों से अपनी जिज्ञासाएँ शांत करने के लिए प्रश्न पुछना, सब कुछ समाप्त हो जाता। पढ़ने लिखने में फिसडडी विद्यार्थी ‘किताबी कीड़े’ कहकर उन्हें चिढ़ाते और वे मन मनोसकर रह जाते। यदि परीक्षाएं न होती तो अध्यापकों को कक्षा में पढ़ाने के लिए तैयारी करने, प्रश्नपत्र बनाने, उत्तर पुस्तिकाएँ जांचने तथा विद्यार्थियों के प्रतिशतों की गणना करने से मुक्ति मिल जाती। परीक्षाएँ बंद हो जाने से सभी विद्यार्थी अनुशासनहीनता हो जाते। प्रगति और विकास की सारी योजनाएं ठप पड़ जाती और देश आदिम युग में लौट जाता। किंतु इस प्रकार की कल्पना सर्वथा निराधार है। परीक्षाएँ होती रहेंगी, वे कभी बंद नहीं होगी। फिर भी यह कल्पना बड़ी मनोरंजक है कि यदि परीक्षाएँ न होती तो क्या होता.....?







कु. प्रगति वगाती  
बी.ए.-प्रथम वर्ष

अचानक प्रकट हुई  
भव्य भगवती शुभ्रवसना !  
और कहा जी, मैं हूँ।  
हिन्दी भाषा, भाव रचना  
जी हाँ, मैं हिन्दी हूँ,  
विश्व भाषा भारती हूँ।  
कबीर का भजन हूँ,  
मैं मीरा की आरती हूँ।  
निराला का गीत हूँ,  
तुलसी की चौपाई।  
महादेवी माधुर्य  
फिराक की रूबाई हूँ।  
रहीम का दोहा हूँ,  
रसखान रचित छंद हूँ !  
सुर का सुंदर पद हूँ,  
जायसी का अनुबंध हूँ !  
मैं स्वयं के बल पर  
पली हूँ, चली हूँ, बढ़ी हूँ।  
मैं खड़ी बोली हूँ,  
अपने पैरों पर खड़ी हूँ !  
मेरा जन गण मन से  
बहुत निकट का नाता है !  
आम आदमी मुझे  
हर जगह लेकर जाता है !  
सब्जी वाले अपने  
आँचल की हवा देते हैं।  
चौक, बाजार, हाट  
मेरी बलैया लेती है !  
मुझे अपनाते है !  
मैं कोई और नहीं  
विश्व भाषा भारती हूँ।

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, जरीपटका, नागपुर



## हिन्दुस्तान की शान

कु. नेहा शर्मा  
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

हिन्दुस्तान की शान है हिंदी  
भाषाओं की जान है हिंदी  
हिंदी के आगे लगती है,  
हर एक भाषा चिंदी चिंदी  
देवनागरी की संतान  
स्वर और व्यंजन इसके प्राण  
राष्ट्रभाषा का गौरव पाकर  
झिलमिल चमके जैसे बिंदी  
हिन्दुस्तान की शान है हिंदी ।

व्याकरण की बहती धारा  
संधि, समास, अलंकार है प्यारा  
सारी भाषाओं में श्रेष्ठ है,  
ज्यों नदियों में, है कालिंदी  
हिन्दुस्तान की शान है हिंदी।

भाषाओं का अजब है खेल  
अनुनासिक, अनुस्वार का मेल  
शब्द, शब्द में भरी मधुरता  
पढ़कर हृदय में हो आनंदी  
हिन्दुस्थान की शान है हिंदी।



## देश कौनसा है

कु. जानवी टेंभुर्णे  
बी.ए. -प्रथम वर्ष

जो प्रकृति की गोद में बसा है।  
स्वर्ग सा सारा जहाँ है वह देश कौनसा है?  
मैदान, गिरी, वनों में हरियालियाँ लहकती  
आनंदमयी जहाँ वह देश कौनसा है ? जिसकी चरण  
निरंतर रत्नेश धो रहा है।  
जिसका मुकुट हिमालय वह देश कौनसा है? नदियाँ  
जहाँ सुधा बढ़ा रही है।  
सींचा हुआ सलोना वह देश कौनसा है?  
बड़े रसीले फल, कंद, नाज, मेवे  
सब अंग में सजे है  
वह देश कौनसा है?  
जिसके अनंत धन से धरती भरी पड़ी है।  
संसार का शिरोमणि वह देश कौनसा है?  
वह देश कोई और नहीं  
मेरा भारत देश है,  
मेरा भारत देश है।



## माँ

कु. प्रिया चव्हाण  
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

सृष्टि की सबसे उत्तम, ऊँची रचना हो तुम माँ।  
तेरे आँगन के हम फूल, तेरे आँचल में रहे झूल।  
मीठी-मीठी तेरी लोरियाँ, विश्व सिंहासन भी लगे धूल,  
सौंदर्य की उत्तम कल्पना, तुम उषा की लाली हो माँ॥

तेरी वाणी मधुर-मधुर है, श्रवणों में रस छोले,  
तेरे ज्ञान की छाया में, हर बालक आँखे खोले।  
प्रथम गुरू हो मेरी, तुम गुणों की खान हो माँ।

माँ तुम मुझको अपनासा ही, धैर्यवान बनाना।  
अपनी सी सहनशीलता का तुम, मुझको पाठ पढ़ाना।  
जीवन के आँधी-तूफ़ानों में, पर्वत सा अचल रहूँ मैं माँ॥

तेरी ममता का प्यार है तेरी संजीवनी बूटी,  
कहि कठोर परिस्थिती में, दे ममता शक्ति अनूठी।  
धरा क्या ब्रह्मांड बचा लूँ, अगर इशारा कर दो माँ॥  
सृष्टि की सबसे उत्तम, ऊँची रचना हो तुम माँ।





## बेटियाँ

कु. हीना धनवानी  
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

औंस की एक बूंद-सी होती है बेटियाँ,  
स्पर्श खुरदुरा हो तो रोती है बेटियाँ।

रोशन करेगा बेटा तो एक ही कुल को,  
दो-दो कुल की लाज होती है बेटियाँ।  
कांटों की राह पर पे खुद ही चलती रहेगी,  
औरों के लिए फूल बोती है बेटियाँ।

विधि का विधान है यहीं समाज की परंपरा,  
अपने घर को छोड़ दिया के घर जाती है बेटियाँ।

कोई नहीं है दोस्त, एक-दूसरे से कम  
हीरा अगर है बेटा तो मोती है बेटियाँ।





## बेटी भ्रूण हत्या को रोको



कु. संजना नंदेश्वर  
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

हुमक-हुमक गाने दो मुझे,  
यू मत मर जाने दो मुझे।  
जीवन भर आभार करूँगी,  
माँ मैं तुझसे प्यार करूँगी।  
मैं तेरी ही बेटी हूँ।  
मुझे जन्म दो, मुझे जन्म दो।

मैं भी तो अंश हूँ तुम्हारा,  
मैं भी तो वंश हूँ तुम्हारा।  
पापा को समझाकर देखो,  
सारी बात बताकर देखो।  
बिगड़ा है अनुपात बताओ,  
क्या होंगे हालात बताओ।  
फिर भी अगर न माने पापा,  
रोऊँगी मनुहार करूँगी।  
जीवन भर आभार करूँगी,  
मुझे जन्म दो, मुझे जन्म दो।

लक्ष्मीबाई, मदर टेरेसा,  
क्या कोई बन पाया पैसा।  
मत कहना एक धाय है पन्ना,  
ममता का अध्याय है पन्ना।  
ये बातें बताओ अम्मा

मैं नहीं पोती दादी की।  
सब गुण अंगीकार करूँगी  
जीवन भर आभार करूँगी।  
दादी को समझाओं अम्मा,  
मुझे जन्म दो, मुझे जन्म दो।





## मजदुर की बेटी

कु. शेफाली नंदेश्वर  
बी.ए.- प्रथम वर्ष

मजदुर कि बेटी अंगारो पे जलती है  
हाथों में नही चुकी मेहन्दी को तरसती है  
जाती है भोर को करने के लिए मजदुरी  
उसकी भी सुनले दाता जो तेरे नाम को भजती है।  
सर पे चुंभर उसके संग रेत माटी का गारा  
ईटो का घर बनाये झोपडी को तरसती है  
कैसे व्यथा सुनाऊ मै हाले-दिल कि उसके  
हंसती है तो हंसती है शेती है तो शेती है  
नैनो से देखा मैने उसकी मजबुरियो को  
कहे 'मन' भाई सुनले हर दर्द को सहती है।





## बापू के अनमोल वचन

कु. शीतल माने  
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

पूर्ण विश्व का इतिहास उन व्यक्तियों के  
उदाहरणों से भरा पड़ा है जो अपने  
आत्मविश्वास, साहस तथा दृढ़ता की शक्ति से  
नेतृत्व के शिखर पर पहुंचे हैं।

अपनी भूलों को स्वीकारना उस झाड़ के  
समान है, जो गंदगी को साफ कर उस स्थान  
को पहले से अधिक स्वच्छ कर देती है।

गुलाब को उपदेश देने की आवश्यकता नहीं होती।  
वह तो केवल अपनी खुशबू बिखेरता है। उसकी खुशबू ही उसका संदेश है।

हमें बच्चों को ऐसी शिक्षा नहीं देनी चाहिए, जिससे वे श्रम को स्वीकार करें

चरित्र और शैक्षणिक सुविधाएं ही वह पूंजी है,  
जो माता-पिता अपने संतान में समान रूप से स्थानांतरित कर सकते हैं।

मुट्ठीभर संकल्पवान लोग, जिनकी अपने लक्ष्य में  
दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं।

सच पर विश्वास रखों, सच ही बोलो, सह ही करो।  
असत्य जीतता क्यों न लगे, सत्य का मुकाबला नहीं कर सकता।





## माता

कु. हीना धनवानी  
बी.कॉम.- द्वितीय वर्ष

माता आत्मोत्सर्ग चाहतीं, आत्मत्याग, सत्कर्म महान।

दीन दलित के आँसू पोंछें, ऐसी बलि पर टिकता ध्यान॥

अन्य जीव, पशुबलि से होगा, कभी न माता का श्रृंगार।

माँ को करुणा, स्नेह चाहिए, माया, ममता की आगार॥

राजा, रंक सभी जाते हैं, माता के दर्शन को।

मलीन, दीन, हीन, आतुर, लुंचित, मुंचित अर्पण को॥

समय शिला के कालचक्र, धारण करतीं भारत माता

इसीलिए शिवशक्ति विराजित, अशरण नाम ख्याता

कोई भक्त निराश न लौटा, माता का अद्भुत वरदान।

सबकी झोली उसने भर दी, हिंदभूमि का यह अवदान॥

मातृभूमि की ऐसी महिमा, वर्षों का यह अद्भुत नाम

मन से माता की पुकार की, पूर्ण मनोप, मंगलकाम॥



## हारी नहीं हूँ मैं

कु. ज्योती गुमास्ता  
बी.ए.- तृतीय वर्ष

गिरी हूँ लेकिन,  
हारी नहीं हूँ मैं.....  
गिर-गिरकर संभलना,  
आता है मुझे,  
अपने हालातों से  
लड़ना आता है मुझे  
हाँ सच है कि  
थोड़ी डरी हूँ मैं,  
लेकिन जिंदा हूँ,  
मरी नहीं हूँ मैं  
गिरी हूँ लेकिन  
हारी नहीं हूँ मैं.....  
तूफानों से भी लड़ना  
आता है मुझे  
बुझी हुई उम्मीदों को,  
जलाना आता है मुझे  
हाँ अभी अन्धेरा है,  
तो सवेरा भी होगा,  
आज शायद मेरा नहीं है,  
लेकिन कल सिर्फ मेरा ही होगा,  
खड़े हुए सपनों को,  
मनाना आता है मुझे,  
हारे हुए हौसलों को,  
जीतना आता है मुझे।

## इंसान

कु. शेफाली नंदेश्वर

बी.ए. - द्वितीय वर्ष

ना जाने क्यों ऐसा हो रहा है ?  
कोई किसी को अपना नहीं समझ रहा है ?  
दूसरो को दुख पहुँचा कर खुश हो रहा है,  
और ना जाने क्यों खुद को इंसान कह रहा है ?  
दर्द भरी आँखो को देखकर,  
क्यों कोई नहीं पिघल रहा है ?  
और ना जाने क्यों खुद को इंसान कह रहा है ?  
मानते तो हैं, हर धर्म,  
लेकिन क्यों उसका पालन नहीं कह रहा है ?  
ना जाने इंसान क्या चाहता है,  
“क्या खुद को भगवान बनाना चाहता है ?”  
और ना जाने क्यों खुद को इंसान कह रहा है ?



## अस्तित्व

कु. प्रियंका हनोते  
बी.कॉम.- द्वितीय वर्ष

माँ मुझे कोख में मत सुलाना।  
मैं भी लेना चाहती हूँ जन्म,  
मैं भी देखना चाहती हूँ।  
आकाश और उसके रंग।  
ओस की पहली बूँद पर,  
मेरा भी हक है।  
मैं भी जीना चाहती हूँ,  
बारिश की रिमझिम,  
और इंद्रधनुष के संग,  
झरने की कलकल और  
इन हवाओं पर  
मेरा भी हक है।

मुझे जन्म तो लेने दो माँ।  
हारती हुई ओ मेरी माँ,  
मुझे आने दो इस दुनिया में,  
मैं बनूँगी तुम्हारे बूढ़ापे की लाठी।  
मैं दूँगी तुम्हें वो हौसला,  
जो ये समाज  
तुम्हें नहीं दे पाया,  
मैं नहीं हारने दूँगी तुझे,  
मैं रचूँगी एक इतिहास,

एक अनोखी सृष्टि  
मुझे चाहिए सिर्फ तुम्हारी दृष्टि,  
मैं जन्म लेना चाहती हूँ,  
मैं पूरी होना चाहती हूँ,  
मैं तुम्हें संपूर्ण बनाना चाहती हूँ।  
माँ, मेरा एक वादा है तुमसे।  
आज नहीं तो कल,  
कल नहीं, तो परसों,  
परसों नहीं तो किसी एक रोज,  
मुझे कोई नहीं मार पाएगा।  
कोई भी मुझे गर्भ में नहीं सुला पाएगा।  
मैं उपजूँगी,  
मैं लूंगी जन्म, अपने पूरे अस्तित्व के संग !





## जीवन की आपाधापी में

कु. श्रद्धा शर्मा  
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

जीवन की आपाधीपी में कब वक्त मिला  
कुछ देर कहीं पर बैठ कभी यह सोच सकूँ  
जो किया कहा माना उसमें क्या बुरा भला,  
जिस दिन मेरी चेतना जगी मैंने देखा मैं  
खड़ा हुआ हूँ इस दुनिया के मेले में अकेला



### चिड़िया का घर

चिड़िया ओ चिड़िया  
कहाँ है तेरा घर ?  
उड़-उड़ आती है  
कहाँ से कर-कर !  
चिड़िया, ओ चिड़िया  
कहाँ है तेरा घर  
उड़-उड़ जाती है,  
कहाँ को फर-फर।  
वन में खड़ा है जो  
बड़ा सा तरुवर  
उसी पर बना है  
खर पतों वाला घर  
उड़-उड़ आती है।  
चिड़िया ओ चिड़िया  
कहाँ है तेरा घर ?



## गम को कहीं छोड़ आते है

कु. अंकिता ठाकुर  
बी.ए.- तृतीय वर्ष

चल आ आज गम को  
कहीं छोड़ आते हैं  
चल आ आज खुशियों को  
फिर मोड़ लाते है .....  
उदासी का ये सिलसिला  
खत्म करते हैं,  
जो नही हो सका,  
उस बात को दफन करते हैं  
चल फिर एक नई उम्मीद लगाते  
चल आ आज गम को,  
कहीं छोड़ आते हैं।  
ढूँढते खुशी को,  
दूर कहीं जाना नहीं है,  
किसी किसे में जो मिले,  
यह दो खजाना नहीं है,  
चल उलझी हुई जिंदगी को,  
थोड़ा सरल बनाते हैं।  
चल आ आज, खुशियों को,  
फिर मोड़ लाते हैं।  
चल आ आज, खुशियों को,  
फिर मोड़ लाते हैं।  
चालाकियों के शहर में,  
चल आ आज एक  
वादा खुद से निभाते हैं,  
जो लोग दिल दुखाते हैं  
उनसे थोड़ा दूर आते हैं,  
चल आ आज गम को,  
कहीं छोड़ आते है।



## मराठी विभाग

संपादन - सहयोगी प्रा. बबीता शूल

### गद्य विभाग

१) स्त्री शिक्षणाच्या अग्रदूत : सावित्रीबाई फुले	कु. वंशिता जांभुळकर
२) वीर भगतसिंग	कु. सोनाली चव्हाण
३) गुणांची पारख	कु. आचल वालदे
४) गरूड आणि घुबड	कु. काजल तिरपुडे
५) गुरूचे ज्ञान	कु. आचल मडामे

### पद्य विभाग

१) स्त्री अन्याय	कु. मितल नंदेश्वर
२) नवसंसार	कु. सोनाली चव्हाण
३) आई	कु. पूर्णिमा पांडे
४) काय मागीतले ? काय मिळाले	कु. शांती पटेल
५) असे असावे आकर्षक व्यक्तीमत्व	कु. शेफाली नंदेश्वर





## स्त्री शिक्षणाच्या अग्रदूत : सावित्रीबाई फुले

कु. वंशिता जांभुळकर  
बी.कॉम.- द्वितीय वर्ष

भारतीय स्त्री मुक्तीच्या व स्त्री शिक्षणाच्या प्रणेत्या, प्रथम शिक्षिका क्रांतिज्योती सावित्रीबाई फुले यांचा आज, ३ जानेवारी जयंतीदिन स्त्री उद्धारासाठी आपले सर्वस्व वाहून देत महात्मा ज्योतिराव फुले यांनी हाती घेतलेल्या समाजोद्धाराचा वसा तितक्याच नेटाने पुढे नेणाऱ्या सावित्रीबाईंना विनम्र अभिवादन !

सातारा जिल्ह्यातील नायगाव येथे ३ जानेवारी १८३१ रोजी जन्मलेल्या सावित्रीबाई या ९ वर्षांच्या असताना १८४० मध्ये त्यांच्या विवाह १३ वर्षे वयाच्या ज्योतिबा फुले यांच्याशी झाला लहानपणापासून ज्योतिबांना जातीयतेचे चटके बसले होते. अस्पृश्यांचे हाल पाहून ज्योतिबांचे काळीज पिळवटून निघत असे. अशा अमानुष रूढी परंपरा व कर्मकांडाविरुद्ध ज्योतिबांचे मन पेटून उठले. ज्योतिबांच्या मनातील पेटत्या ज्योतिरा प्रज्वलीत करण्याचे कार्य सावित्रीनेच केले व ती खऱ्या अर्थाने सामाजिक क्रांतीची प्रखर ज्योत झाली.

सर्वांना शिक्षणाचे महत्त्व पटवून देत त्यांना शिक्षण घेण्यासाठी प्रवृत्त करण्याचे कठीण कार्य ज्योतिराव व सावित्रीबाई यांनी केले. १ जानेवारी १८४८ रोजी पूणे येथील बुधवार पेठेत मुलींची पहिली शाळा काढून या दाम्पत्याने प्रथम शिक्षणाची मुहूर्तमेढ रोवली. काही धर्ममार्तंडांनी धर्म बुडाला अशी ओरड केली व सावित्रीबाईंवर धर्मबुडवी म्हणून ते शेणमाती, दगड फेकू लागले. तरीसुद्धा त्या मागे हटल्या नाहीत. अस्पृश्यांना शिकविल्यामुळे सनातनी मंडळी जास्तच चिडली. त्यांनी ज्योतिरावांच्या वडिलांवर सामाजिक बहिष्कार टाकण्याची धमकी दिली. त्यामुळे ज्योतिरावांच्या वडिलांनी त्यांना घराबाहेर काढले. वयाच्या अवघ्या १९ व्या वर्षी सावित्रीबाई फुले यांना घराबाहेर पडणे भाग पडले. अशाही परिस्थितीत सावित्री मुळीच डगमगली नाही. ज्योतिरावांच्या कार्यात त्यांनी पूर्णपणे साथ देण्याची तयारी केली होती. सावित्रीबाई फुले अशिक्षित होत्या. त्यांना ज्योतिराव फुले यांनी घरी शिकविले व नंतर शाळेत शिक्षण देण्याचे कार्य सावित्रीबाईंनी केले. इ.स. १८४८ ते १८२५ पर्यंत त्यांनी एकूण १८ शाळा काढल्या. त्यांच्या शाळेची नोंद सरकारी दफतरात झाली तेव्हा १२ फेब्रुवारी १८५२ मध्ये मेजर कॅन्डी यांच्या हस्ते महात्मा फुले व सावित्रीबाई फुले यांचा शाल व श्रीफळ देऊन सत्कार करण्यात आला. तसेच शाळांना सरकारी अनुदान जाहीर केले. शिक्षणाची महती गाताना सावित्रीबाई म्हणतात -

विद्या हे धन आहे रे श्रेष्ठ साऱ्या धनाहून

तिचा साठा ज्यापाशी, तो ज्ञानी मानिती जन

त्याकाळी बालविवाहामुळे अनेक मुली गरोदर असताना विधवा झाल्या. त्यांच्याकरिता या फुले दाम्पत्याने १८६३ रोजी बालहत्या प्रतिबंधक गृहाची स्थापना करून एक प्रसूतिगृहही सुरू केले. केशवपनाविरुद्ध नागरिकांना संघटीत करून नाभिकांचा संप घडवून आणण्याचा कल्पक उपक्रम कामगार नेते नारायण मेघाजी लोखंडे यांनी केला. त्यामागची प्रेरणा सावित्रीबाईंचीच होती. इतकेच नव्हे तर विधवा आईच्या पोटी जन्म घेणाऱ्या यशवंतला दत्तक घेऊन सावित्रीबाईंनी त्याला डॉक्टर केले.

जुलै १८८७ मध्ये ज्योतिरावांना पक्षाघाताचा आजार झाला. त्याचे उजवे अंग लुळे पडले. त्यांच्या आजारपणात सावित्रीबाईंना त्यांची अहोरात्र शुश्रूषा केली. २८ नोव्हेंबर १८९० रोजी ज्योतिरावांचे त्या आजारात निधन झाले. अंत्ययात्रेच्या वेळी जो टिटवे धरतो त्याला वारसा हक्क मिळत असल्याने ज्योतिरावांचे पुतणे आडवे आले आणि ज्योतिरावांचा दत्तक पुत्र यशवंतरावांना विरोध करू लागले. त्यावेळेस सावित्रीबाई धैर्याने पुढे आल्या व स्वतः टिटवे धरले. अंत्ययात्रेच्या अग्रभागी चालल्या आणि स्वतःच्या हाताने ज्योतिरावांच्या पार्थिवाला अग्नि दिला. यशवंतराव हा विधवेचा मुलगा असल्याने त्याला कुणीही मुलगी दयायला तयार नव्हते. तेव्हा कार्यकर्ता ज्ञानोबा कृष्णाजी ससाणे यांच्या राधा नावाच्या मुलीशी ४ फेब्रुवारी १८८९ रोजी विवाह यशवंतचा करून दिला. हाच महाराष्ट्रातील पहिला आंतरजातीय विवाह होय.

२४ सप्टेंबर १८७३ रोजी सत्यशोधक समाजाच्या स्थापनेनंतर ज्योतिरावांच्या निधनानंतर सत्यशोधक चळवळीचे नेतृत्व करण्याची जबाबदारी सावित्रीबाईंवर आली. १८९३ रोजी सासवड येथे झालेल्या 'सत्यशोधक परिषदेचे अध्यक्षपद सावित्रीबाईंनी भूषविले. आपल्या विचाराचा प्रसार त्यांनी आपल्या साहित्याच्या माध्यमातून केला. 'काव्यफुले' व 'बावनकशी सुबोध रत्नाकर' या काव्यरचना त्यांनी लिहिल्या.

१८९७ मध्ये पुण्यात प्लेगच्या साथीने थैमान घातला होता. हा जीवघेणा आजार अनेकांचे जीव घेत होता. त्यातून उद्भवणारे हाल ओळखून प्लेग पीडितांची सेवा करताना सावित्रीबाईंनाही प्लेग झाला. यातच १० मार्च १८९७ रोजी वयाच्या ६६ व्या वर्षी त्यांची प्राणज्योत मालवली.

अशा या भारतीय स्त्री मुक्तीच्या व स्त्री शिक्षणाच्या प्रणेत्या प्रथम शिक्षिका क्रांतिज्योती सावित्रीबाई फुले यांच्या १८७ व्या जयंती दिनानिमित्त त्यांना विनम्र अभिवादन!





## वीर भगतसिंग

कु. सोनाली चव्हाण  
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

भारताच्या स्वातंत्र्य संग्रामातील एक अत्यंत महत्वाचे पात्र म्हणजे वीर भगतसिंग होय. भगतसिंग सारख्या शूर आणि धाडसी व्यक्तिमत्त्वने शुरतेचा असा पाया रचला आहे की, आजही त्यांच्या विषयी वाचल्यानंतर छाती गर्वाने फुलून जाणे अंगाअंगात देशभक्तीचे रोमांच उभे राहते. अंगात स्फूर्ती भरण्याकरीता फक्त वीर भगतसिंग हे नावच पुरेसे आहे. असा या शुरवीर, पराक्रमी भगतसिंग यांचा जन्म २८ सप्टेंबर, १९०७ रोजी पंजाब मधील लाहोर जवळ असलेल्या बांगा या गावी झाला. त्याचे संपूर्ण घराणेच क्रांतीकारकाचे मेरूमणी या शब्दांत त्याचा गौरव केला जातो. भारतीय स्वातंत्र्यासाठी आपल्या प्राणांची आहुती देणाऱ्या महान देशभक्तांपैकी सरदार भगतसिंग हे एक होत.

भारताचे महात्मा गांधी यांच्या नेतृत्वाखाली संपूर्ण अहिंसात्मक मार्गाने स्वातंत्र्य मिळविले असे म्हटले जाते, परंतु भारतीय स्वातंत्र्यासाठी सशस्त्र क्रांतीच्या मार्गावर विश्वास ठेवून अनेक क्रांतीकारकांनी इंग्रजी सत्तेविरुद्ध उघड संघर्ष करण्याचा पवित्रा घेतला होता. आपल्या ध्येयपुर्तकरिता या क्रांतीकारकांनी आत्मबलिदानाची तयारी ठेवून अत्युच त्यागाचा आदर्शच आपल्या देशबांधवांपुढे निर्माण केला जातो. म्हणुनच भारतीय स्वातंत्र्यांत अहिंसात्मक चळवळीबरोबर येथील क्रांतीकारकांनी चालविलेल्या क्रांतिकार्याचाही महत्वाचा वाटा होता, या वस्तुस्थितीचा विसर पडू देता येणार नाही. भगतसिंगाचे वडील किसनसिंगा अनेक चळवळीत अग्रभागी राहिले होते. त्यांनी देशासाठी कारावासही भोगला होता. भगतसिंगाचे एक चुलते अजितसिंग यांना लाला लजपतराय यांच्याबरोबर हद्दपारीची शिक्षा झाली होती व मंडालेच्या तुरुंगात त्यांना स्थानबद्ध करण्यात आले होते. भगतसिंगाचे आणखी एक चुलते स्वर्णसिंग यांनाही स्वातंत्र्य चळवळीत भाग घेतल्याबद्दल ब्रिटिशांनी तुरुंगात टाकले होते. भगतसिंग यांचे शिक्षण लाहोरच्या दयानंद अँग्लो वैदिक शाळेत झाले या शाळेत शिकत असतानाच त्यांच्यावर राष्ट्रवादी विचारांचे संस्कार झाले होते. सन १९१९ मध्ये रौलेट कायद्याचा विरोधात देशभर प्रचंड निदर्शन झाली. या कायद्याचा निषेध करण्यासाठी लाहोर येथे जो प्रचंड मोर्चा निघाला त्यामध्ये बारा वर्षे वयाच्या भगतसिंगानीही भाग घेतला होता. पुढे १९२० मध्ये महात्मा गांधीजी

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, जरीपटका, नागपुर

असहकाराची चळवळ सुरू केली. गांधीजीच्या आदेशानुसार भगतसिंगानी शाळा सोडून या चळवळीत उडी घेतली. महात्मा गांधीनी असहकाराची चळवळ पाठीमागे घेतल्यावर भगतसिंग पुन्हा शाळेत जाऊ लागेल शालेय शिक्षण पूर्ण झाल्यावर लाहोरच्या नॅशनल कॉलेजात त्यांनी प्रवेश घेतला याच ठिकाणी त्यांचा सुखदेव यांच्याशी परिचय झाला.

कॉलेजमध्ये शिक्षण घेत असतानाच भगतसिंग व त्यांच्या सहकाऱ्यांनी १९२५ मध्ये नौजवान भारत सभेची स्थापना केली. या संघटनेचे उद्दिष्ट भारतातील इंग्रजी सत्ता नष्ट करून शेतकरी व कामगार यांचे प्रजासत्ताक स्थापना करणे आणि शोषणविरहीत समाजाची निर्मिती करणे हे होते. सरदार भगतसिंगावर कॉलेज जिवनापासूनच मार्क्सवादाचा प्रभाव होता, म्हणून त्यांनी शेतकरी व कामगार यांचे राज्य स्थापना करण्याचे उद्दिष्ट मनाशी बाळगले होते. त्यांच्या नौजवान सभेच्या इन्कलाब झिंदाबाद व हिंदुस्थान झिंदाबाद अशा दोन घोषणा होत्या.

यानंतर भगतसिंगानी आपल्या कार्याची व्याप्ती वाढविण्याचा प्रयत्न चालविला. त्यासाठी त्यांनी लाहोर बाहेरील दिल्ली, कानपूर इत्यादी शहरातील क्रांतिकारांशी संपर्क साधला त्यातूनच त्यांचा हिंदुस्थान रिपब्लिकन असोसिएशनच्या कार्यकर्त्याशी परिचय झाला. या संघटनेने काकोरी कटाची योजना आखून सरकारी खजिना असलेली रेल्वे गाडी लुटली होती. त्या कटातील क्रांतिकारकांना पकडून सरकारने त्यांना फाशिचा शिक्षा सुनावली पण कटातचे सुत्राधार चंद्रशेखर आझाद हे मात्र सरकारच्या हाती लागले नाहीत.

काकोरी कटामुळे क्रांतिकारक नेत्यांवर करडी नजर ठेवली. त्यामुळे भगतसिंगाना काही काळ भूमिगत व्हावे लागले. तथापि, त्यांनी आपल्या कार्यात मात्र खंड पडू दिला नाही. याच काळात त्याची चंद्रशेखर आझाद यांच्याशी भेट झाली. १९२८ मध्ये उत्तरप्रदेश, पंजाब, दिल्ली, राजस्थान, बिहार इत्यादी भागांतील प्रमुख क्रांतीकारकांची दिल्ली जवळ खंडहर गावात एक बैठक झाली. या बैठकीत सर्व प्रांतांतील क्रांतीकारकांच्या प्रतिनिधींची एक केंद्रीय समिती स्थापन करण्यात आली तसेच क्रांतीकारकांची नवी संघटना स्थापन करून तिचे नाव हिंदुस्थान सोशलिस्ट रिपब्लिकन असोसिएशन असे ठेवण्यात आले. संघटनेच्या नावात सोशलिस्ट या शब्दाचा अंतर्भाव करण्याची सुचना भगतसिंग यांनी मांडली व ती सर्वानुमते मंजूर झाली. स्वतंत्र भारतात शेतकरी कामगारांचे राज्य स्थापन करणे व शोषणविरहित समाजाची निर्मिती करणे हिच आपली उद्दिष्टे असल्याचे या संघटनेने घोषित केले.

लालाजीच्या हत्येचा बदला भारताला काही सुधारणा देण्याच्या उद्देशाने ब्रिटिश सरकारने १९२७ मध्ये सायमन कमिशनची नियुक्ती केली, पण या कमिशनचे सातही सदस्य इंग्रज होते. त्यात एकही भारतीय नव्हता, म्हणून भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेसने सायमन कमिशनवर बहिष्कार टाकण्याचा



निर्णय घेतला. भारतातील अनेक शहरात या कमिशनच्या विरोधात निर्दशने झाली या कमिशन विरुद्ध लाहोर शहरात झालेल्या निर्दशनाचे नेतृत्व वयोवृद्ध काँग्रेस नेते लाला लजपतराय यांनी केले होते. त्या प्रसंगी पोलिसांशी निर्दशकांवर अमानुष लाठी हल्ला केला. लाला लजपतराय या लाठी हल्ल्यात जबर जखमी झाले व पुढे त्यातच त्यांचा अंत झाली. लालाजींच्या निधनाने देशात सर्वत्र संतापाची एकच लाट उसळली. हिन्दुस्थान सोसालिस्ट रिपब्लिकन असोसिएशनचे तर लालाजींच्या हत्येचा बदला घेण्याचा निर्णय घेतला लालाजींच्या मृत्यूस कारणीभूत झालेल्या स्कॉट या अधिकाऱ्यास ठार करण्याची योजना आखण्यात आली. या कामासाठी भगतसिंग, चंद्रशेखर आझाद, राजगुरु व जयगोपाळ यांची निवड झाली. त्यांनी १७ डिसेंबर १८२८ रोजी स्कॉटला मारण्याची जय्यत तयारी केला, परंतु या प्रयत्नात स्काटऐवजी सॅडर्स हा दुसरा अधिकारी ठार झाला. या घटनेनंतर लाहोरचे पोलिस भगतसिंग व त्यांचे सहकारी यांचा शोध घेऊ लागले म्हणून भगतसिंगांनी गुप्तपणे लाहोर सोडले व ते थेट कलकत्त्याला जाऊन पोहोचले. त्या ठिकाणी त्यांची जतींद्रनाथ दास यांच्याशी ओळख झाली इतर बंगाली क्रांतीकारकही त्यांच्या परिचयाचे होते. जतींद्रनाथ दास यांना बॉम्ब बनविण्याची कला अवंगत होती. भगतसिंग जतींद्रनाथ यांनी बॉम्ब बनविण्याचा कारखाना सुरू करण्याची योजना आखली आणि त्याप्रमाणे आग्रा येथे असा कारखाना सुरू केला त्या ठिकाणी इतर क्रांतीकारकांनाही बॉम्ब बनविण्याचे प्रशिक्षण दिले जाऊ लागले. लवकरच हा कारखाना देशातील क्रांतीकारकांच्या हालचालीचे प्रमुख केंद्र बनला.

या खटल्यात भगतसिंग व बटुकेश्वर दत्त यांना आजन्म कारावासाची शिक्षा झाली. त्यानंतर भगतसिंग, सुखदेव व राजगुरु यांच्यासह एकुण चौदा क्रांतीकारकांवर लाहोर कटाचा दुसरा खटला भरण्यात आला. हा खटला सॅडर्सच्या सुनावदल होता. यावेळी हे सर्व क्रांतीकारक तुरुंगातच होते. तेथे सरकारने त्यांना सामान्य गुन्हेगाराप्रमाणे वागणुक देण्यास सुरुवात केली. त्याविरुद्ध सर्व क्रांतीकारकांनी अन्य-सत्याग्रहामुळे संपूर्ण देशातील लोकमत सरकार विरुद्ध प्रक्षुब्ध झाले. क्रांतीकारकांविषयी सर्वत्र प्रचंड आकर्षक निर्माण झाले. भगतसिंग व बटुकेश्वर दत्त यांचे उपोषण तर एक्याऐंशी दिवस चालू राहिले. अखेर क्रांतीकारकांच्या निर्धारपुढे मग्न ब्रिटिश सरकारलाही माघार घेणे भाग पडले. त्याने क्रांतीकारकांच्या मागण्या मान्य केल्या.



## गुणांची पारख

कु. आचल वालदे

बी.ए.- द्वितीय वर्ष

विशाखा नगरचा सेन गुप्त नावाचा राजा होता. तो इतर राज्यातील विद्वानांना आपल्या राज्यात आमंत्रित करून त्यांचा मानस्मान, सत्कार करीत असे. तसेच आपल्या राज्यातील विद्वानांशी त्यांची चर्चा घडवून आणत असे. जेणे करून आपल्या राज्यातील विद्वान लोकांना जगाचे ज्ञान प्राप्त व्हावे, विचारांचे आदान प्रदान व्हावे. त्यामुळे आपल्या राज्याचे वैचारीक वैभव वाढावे असा त्याचा उद्देश होता. परिणामी गावोगावांहून विद्वान त्याच्या दरबारात येत सन्मानित होत आणि समाधानाने सेनगुप्त राजाचे कौतूक करीत परत जात. सेनगुप्ताच्या या भुमिकेमूळे विशाखानगरचा लौकिक दिवसेंदिवस वाढत होता. एकदा असाच एक विद्वान ऋषिकुमार विशाखा नगरात आला होता. त्याचा सत्कार करण्यासाठी दरबार भरविण्यात आला. ऋषिकुमार विद्वपू होता, हातपाय वाकलेले, मान दुगडूगट असलेली अशा त्या ऋषिकुमाराला पाहून सारा दरबार, सारे लोक हसू लागले, राजाही हसू लागला, तसा तो ऋषिकुमारही हसू लागला ते पाहून मात्र राजाला नवल वाटले, राजाने त्याला त्याबद्दल विचारले, तेव्हा त्या ऋषिकुमारानेच उलट राजाला विचारले, आपल्यासह दरबारातले हे सारेजण का हसत आहेत.

त्यावर एक विद्वान म्हणाला “आम्हाला तुझ्या कुरूप शरिराकडे पाहून हसू आले. हे ऐकून ऋषिकुमार राजाला म्हणाला महाराज आपल्या दरबारात मोठी विद्वान मंडळी आहे. असं मी ऐकल होत. पण इथ तर चामड्याची परिक्षा करणारी मंडळी दिसताहेत, ज्या साऱ्यांनी आणि आपणही माझ्या केवळ बाह्य रूपावरून माझी परिक्षा केलीत. अशा या विद्वानाची कीव येऊन मी हसत होतो. हे त्यांचे उत्तर ऐकून मात्र सारेजण ओशाळले.

तात्पर्य : माणसाची पारख त्याच्या गुणावरून करावी रूपावरून नव्हे.





## मला पंख असते तर .....

कु. प्राची कांबळे

बी.ए.- तृतीय वर्ष

खरच, मला पंख असते तर मी स्वच्छंदी झालो असतो. वाटेल तेथे मी जाऊ शकलो असतो. समजा असे पंख मला एकट्याला मिळाले असते तर मी एक प्रेक्षणीय व्यक्ति झालो असतो. दुरचित्रवाहीणांच्या फोटोग्राफरचे कॅमेरे रोखले गेले असते आणि पंख असलेला माणूस पाहण्यास उत्सुक झाले असते. केवळ पंखामुळे मला खूप प्रसिद्धी मिळाली असती.

मला पंख मिळाले तर मी माझी प्रवासाची होस भागून गेईल. देशातील प्रेक्षणीय स्थळे मी पाहून गेईल. मला लाभलेल्या या संधीचा मी समाजाची सेवा करायला उपयोग करीन. समजा एखादया ठिकाणी अपघात झाला, तर मला असलेल्या पंखामुळे मी तेथे लवकर पोहचेल आणि अपघात ग्रसतांना जास्त मदत करू शकेन.

शहरात अनेकदा आपण वाहनांच्या कोंडित अडकतो अशा वेळी आपण काहीही करू शकत नाही आपण रेल्वेने प्रवास थांबतो. आपण अगतित होतो. अशा वेळी आपल्याकडे पंख असले, तर आपण सहज आपण आकाशातून उडत-उडत हव्या त्या ठिकाणी जाऊ शकतो.

सर्वांनाच पंख मिळाले तर आकाशात गर्दी होईल. पण अशावेळी मनात येते कि, मग पक्षी आपल्यावर आपटतील? आकाशातील पक्ष्यांनी धडक दिल्याने विमानाला अपघात झालेल्या बातम्या आपण वाचतो. मग काय उपयोग या पंखाचा? त्यापेक्षा आपले पायच बरे!





## गरुड आणि घुबड

कु. काजल तिरपुडे  
बी.ए.- तृतीय वर्ष

एक गरुड आणि एक घुबड फार दिवस एकमेकांशी भांडत असत. शेवटी त्यांनी परस्पराशी मित्रत्वाने वागण्याची शपथ घेतली व एकमेकांच्या पिल्लांना खाऊ नये असे ठरविले. घुबड गरुडाला म्हणाले, गडया! पण माझी पिल्ले कशी असतात, हे तुला ठाऊक आहे ना? ठाऊक नसेल, तर ती दुसऱ्या एखाद्या पक्ष्यांची आहेत असे समजून तू त्यांना गट्ट करशील, अशी मला भीती वाटते. गरुड म्हणाला खरेच तुझी पिल्ले कशी असतात. हे मला मुळीच ठाऊक नाही. घुबड म्हणाले, ऐक तर. ताझी पिल्ले फार सुंदर असतात त्यांचे डोळे सुंदर, शब्द सुंदर, पिसे सुंदर, सगळेच सुंदर काही सुंदर असते. या वर्णनावरून माझी पिल्ले कोणती हे तूला सहज समजेल.

पुढे एक दिवशी, एका झाडाच्या ढोलीत, गरुडास घुबडाची पिल्ले सापडली. त्यांजकडे पाहून तो म्हणाला, किती घाणेरडी, कंडाळवाणी आणि कुरूप ही! आपल पिल्ले फार सुंदर असतात, म्हणून घुबडाने सांगितले आहे. तेव्हा ही घुबडाची पिल्ले खास नव्हते. यास मारून खाण्याची काही हरकत नाही, असे म्हणून त्याने त्या पिल्लांचा फडशा उडविला!

आपली पिल्ले नाहीशी झालेली पाहून घुबड गरुडाला म्हणाला गडया! माझी पिल्ले तूच मारून खाल्लीस, असे मला वाटते. गरुड म्हणाला, मी खाल्ली खर पण तो माझा दोश नव्हे. तू आपल्या पिल्लाचे जे छोटे वर्णन केलेस. त्यामुळे ती मला ओळखता आली नाहीत. इतकी कुरूप पिल्ले घुबडाची नसतील. तर दुसऱ्या एखाद्या पक्ष्याची असतील, असे समजून मी ती मारून खाल्ली. यात माझा काय अपराध आहे बरं?

तात्पर्य - स्वतः संबंधाची खरी हकीकत लपवून ठेवून भलतीच हकीकत सांगणारा मनुष्य शेवटी आपणास संकटात पाडून घेतो.



## गुरुचे ज्ञान



कु. आचल मडामे  
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवा महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परं ब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः॥

पूर्वी धौम्य नावाच्या मुनींचा एक आश्रम होता. तेथे त्यांचे पुष्कळ शिष्य विद्याभ्यासासाठी रहात. त्यात अरुणी नावाचा एक शिष्य होता. एकदा जोराच्या पाऊस पडू लागला. जवळील ओढ्याचे पाणी शेतात जाऊ नसे म्हणून तेथे एक बांध घातला होता. त्या बांधालाही पाण्याच्या जोराने भेगा पडू लागल्या तेव्हा गुरुदेवांनी काही शिष्यांना सांगितले “पाणी शेतात येऊ देऊ नका आणि पाणी अडवा” अरुणी आणि काही शिष्य बांधाजवळ आले. बांधाला पडलेल्या भेगा मिटविण्यासाठी सर्वांनी प्रयत्न केले. पण पाण्याचा जोर जास्त असल्याने सर्व प्रयत्न व्यर्थ गेले. बांधाचा मधला थोडासा भाग फुटू लागला आणि पाणी हळूहळू शेतात येऊ लागले. तेव्हा रात्र झालेली होती. आता काही उपयोग नाही. म्हणून सर्व शिष्य परत आले. दिवसभर कष्ट केल्यामुळे दमलेले सर्व जण गाढ झोपी गेले. सकाळपर्यंत पाऊस थांबला. तेव्हा सर्वांच्या लक्षात आले. अरुणी कोठेही नाही. सगळ्या आश्रमात शोधून शेवटी ते गुरुदेवांकडे गेले आणि म्हणाले “गुरुदेव, अरुणी हरवला” गुरुदेव म्हणाले “आपण शेतात जाऊन बघू या” सर्व शिष्य आणि धौम्यऋषी शेतात जातात. पहातात तर काय? फुटलेल्या बांधाच्या मध्ये पाणी अडविण्यासाठी स्वतः अरुणीच तेथे आडवा झोपलेला त्यांना दिसला. हे पाहून सर्वजण थक्क झाले. रात्रभर पावसात, न जेवता झोपलेल्या अरुणीविषयी सर्वांच्या मनामध्ये प्रेम निर्माण झाले. पाणी तर केव्हाच ओसरलेले होते. पण अरुणीला तेथे झोप लागली होती सर्वांनी त्याच्याजवळ जाऊन त्याला उठवले. अरुणीकडून आपण काय शिकायचे? तर गुरुंचे आज्ञापालन करण्याची तीव्र तळमळ. गुरुंचे आज्ञापालन करण्यासाठी अरुणीने स्वतःचा विचार केला नाही. म्हणूनच तो गुरुंचा आवडता शिष्य बनला. यासाठी आपणही आपल्या गुरुंच्या चरणी प्रार्थना करू या. ‘हे गुरुदेव आमच्या मध्येही अरुणी सारखे गुण येऊ दे’





## स्त्री अन्याय

कु. मितल नंदेश्वर

बी.ए.- तृतीय वर्ष



आयुष्याच्या जात्यावर दळत

असतेस तु,

संसाराच्या ग्रीष्मामध्ये झडत

असतेस तु

सुन - मुलगी - पत्नी - आई

अशी सारखी पडत असतेस तु

इतकं असुनही फार थोड्यांना

कळत असतेस तु, आणि

स्टो भडकुन शेवटी

एकटी जळत असतेस तु



## नवसंसार

कु. सोनाली चव्हाण  
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

पाऊस-पाऊस-पाऊस हा पाऊस किती.....  
छाण।

त्या वृक्षाखाली ओल झालं सार.....  
राण।

राणात होतो मी माझ्या मिठीत.....  
होती ती।

तीच माझ्या मिठीत असण त्या.....  
निसर्गाला सुद्धा आवडते।

कधी मेघांचा गडगळात होरून पाऊस.....  
धो-धो बरसतो।

गडगळणाऱ्या मेघात तो धो-धो.....  
येनारा पाऊस।

तीच्या मिठीत ओल होण्याची पुन्हा.....  
आहे मला हाऊस।

ती हाऊस करता-करता किती दिवस.....  
निघून जाणार।

तूझे तेच प्रेम माझ्याशी असेल तर ते.....  
दिवस नेहमीच गं येणार।

आपण दोघेही सोबत राहू ईश्वराशी.....  
हेच मागन मागितल।

आज तूला माझ्या प्रेमाच कुणी काय.....  
गं मागितलं।

लोकांच्या मांगण्यावर तू भरोसा.....  
कसकाय केला।

आज तूच मला मारून गेली.....  
माझ्यावरचा विश्वास उडून गेला।

विश्वास असो-नसो हे नव संसार.....  
सुखमय वसू दे।

माझ्या भाग्यात नाही तू! निदान.....  
तुझे प्रेम तरी असू दे।

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, जरीपटका, नागपुर



## आई

कु. पूर्णिमा पांडे  
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

कोणत्या शब्दात सांगू आई  
तू माझ्यासाठी काय आहेस.....?  
भुकेल्या जिवाचा मायेचा घास तू वेदनेनंतरची  
माझी पहिली हाक तू  
अन् माझा प्रगाढ विश्वास तू  
हृदयाच्या स्पंदनातील माझा  
प्रत्येक श्वास तू....!  
जीवनातील माझ्या सुखाची बाग तू



आधीमधी रागात सूर्याची आग तू  
अंधारालाही दूर करणारा प्रकाश तू  
माझी मायेची धरती अन् घ्यायेचं  
आकाश तू.....!!

मायेच्या पावसाची ओलावा तू  
जीवनी सुखाचा गारवा तू  
आई दूधरूपी अमृताचा गोडवा तू  
अन् शेवटच्या क्षणापर्यंतचा कुशीतील विसावा तू.....!!!

## काय मागीतले ? काय मिळाले

कु. शांती पटेल  
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

जर देवाने मला संकटे दिली  
तर बलवान होण्यासाठी शक्ती मागावी

जर देवाने मला समस्या दिल्या  
तर सोडविण्यासाठी शहाणपण मागावे

जर देवाने बुद्धिमत्ता आणि ताकद दिली  
तर काम करण्यासाठी आशीर्वाद मागावे

देवाने अडथळे दिले  
तर पार करण्यासाठी धाडस मागावे

संकटग्रस्त माणसांना मदत करण्यासाठी  
बळ मागावे



## असे असावे आकर्षक व्यक्तीमत्व

कु. शेफाली नंदेश्वर  
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

तोंडावर सदैव प्रसन्न हास्य,  
स्वच्छ आचरण, मृदु, मधुर वाणी,  
साधी राहणी, उच्च विचारसरणी,  
जिद्दी, तडफदार, बाणेदार वृत्ती,  
मुर्तीमंत, उदंड उत्साह,  
दुसऱ्याला आपलेसे करण्याची हातोटी  
या साऱ्यांचा सुरेख संगम  
म्हणजेच आकर्षक व्यक्तीमत्व!  
यामुळे मित्र जोडता येतात,  
दुसऱ्यावर छाप पाडून,  
कार्याचा ठसा उमटवून  
हृदयात स्थान मिळविता येते.  
प्रयत्नाने आपल्या व्यक्तीमत्वालाही पैलू पाडा  
आणि जीवनात यशस्वी व्हा.



## ENGLISH SECTION

*Editor : Dr. Chetna Pathak*

### Table of Contents

#### PROSE SECTION

The importance of Good English in Business : 7 Big Benefits	Ku. Sonali Chauhan
Place of Woman in Indian Society	Ku. Archana Gautam
The Role of Students in Free India	Ku. Mahima Yadav
Waddling Duck	Ku. Baljeet Kaur
Lal Bahadur Shastri	Ku. Jyoti Gupta
Save the Forest	Ku. Meenal Nandeshwar
Trees Our Friends	Ku. Sarita Shukla
Chocolate Children's Favorite Food	Ku. Jyoti Gumastha
Leaning Tower of Pisa	Ku. Kajal Tirpude
Marie Curie	Ku. Rupa Tiwari
1962 - Video Games	Ku. Heena Dhanrajani
Rabindranath Tagore	Ku. Pooja Wankhede
My Country	Ku. Namrata Prasad

#### POETRY SECTION

Rain	Ku. Payal Kewalramani
When I Asked God	Ku. Margret Glory
School Life	Ku. Shefali Nandeshwar
Value Every Minute	Ku. Chandrakanta Sharma
My Teacher	Ku. Khushboo Barsagade
Self Confidence	Ku. Shivani Pande
Life is Math	Ku. Vanshita Jhambhulkar
Winter Song	Ku. Anchal Sahu
Snowfall	Ku. Rachana Bansod

# PROSE SECTION

# THE IMPORTANCE OF GOOD ENGLISH IN BUSINESS : 7 BIG BENEFITS

*Ku. Sonali Chauhan*

B.A. II

Here are seven ways having good English skills can help you succeed in business. It shows your willingness to go beyond basic business standards. Back in the early days of pre-globalization, knowing English was a plus. Like it or not, it was a mark of superior knowledge and sophistication. It makes you look impressive in the society.

Now, regardless of your background and upbringing. Many bosses will automatically expect you to know the language. Even if you receive education in a different language or come from a place where English is rarely spoken. Today you are expected to know English.

This means that in order to impress your interviewer or boss now, you have to show that you are extremely fluent and competent in both speaking and writing the language.

1. How can you reach that level ?

One way is by studying with videos on Fluentu. Fluentu helps you reach true fluency by showing you the importance of English and how it is spoken in real life, in business situations meeting people, while making small talks and more. Fluentu has plenty of material related to business and the workplace. However, it will also build your English knowledge around the latest pop culture, music and important news events. Which will help you keep up in English conversations with clients and in the office.

You can also either subscribe to a professional language learning course or check out online courses, like MOOCS, dedicated to improving your business

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, जरीपटका, नागपुर

English skills. One of the best places to find business English online courses is Coursera. The great thing about coursera is that you can earn certification for courses from top universities, which gives you another way to impress your future boss.

2. It will help you to communicate better with your colleagues.

Working in an office means teamwork and collaboration. Even if you are an introvert (someone who prefers to spend more time alone), you will have to interact with your colleagues. And that will be difficult if you don't know the language they speak very well. In a worst-case scenario, it may even lead to misunderstandings that might put your job at stake.

Similarly, you need to know the right people to get the best job or a promotion at work for that you need superior networking skills. Learning business English helps you to develop both your language and interpersonal communicational skills.

Ultimately, it will help you to adequately express and represent yourself in front of other people. The best way to learn better English Communication is to speak the language often, preferably with a study partner in person or online, via skype. You can also check out this MOOC on communication skills on coursera.

3. It is important for delivering presentations and speeches.

As mentioned before, business English is important for effective communication. You cannot deliver a presentation to your team or be in charge of a board meeting if you speak in your native tongue and specially if no one in that room speaks that language. So you need to speak the "common tongue" well, so you can translate your thoughts and ideas into clearly and language that everyone can understand and respond to.

Just having a great idea isn't enough. You have to successively express it to your audience. Luckily, there are also plenty of online courses that focus on successful business meetings and presentations.

4. It allows you to travel

If you have always dreamed of working for an international company or traveling around the world for business, English is the most likely language to help

you communicate with strangers.

After all, you don't want to get into a situation where you are in a foreign country and no one can understand what you are saying ?

5. It gives you an edge in other jobs as well.

If you have a full time job or run your own business, but also do night shifts or part time jobs to supplement your income, you probably already know that your English proficiency will give you an edge over other applications.



Teacher :- Nation Builder

Practice makes perfect.

Get better don't stop.

Think high, fly high

Engineering is being original being creative.

Best acting is instinctive.

Attitude is a reflection of who you are.

Music is peace of mind.

Dance is a source of energy.

Explore beyond the horizons.

Fashion is a state of mind.



## PLACE OF WOMAN IN INDIAN SOCIETY

*Ku. Archana Gautam*

B.Com. III

Man for the field and woman for the earth is over now. Today we cannot draw a line of demarcation between man and woman. We can not keep them in two separate compartment. Long back marriages took place in childhood, woman had no liberty to remarry. There was custom of using veil.

In early society there were limitation between man's and woman's work. It was due to division of labour between man and woman. This division of labour was the natural result of woman's delicate body. Woman wanted to come out of home and kitchen to get education, to take up a job for her liking, to choose her husband and to take part in all social and political activity. In Europe and America Woman enjoy equal status with man in society.

Today woman are Typists, Clerk, Doctors, Engineers, Lawyers, Teachers, Research scientists, Police, Players, Singer, Dancer, Politicians, Dress Designers, Artists etc. Life of great woman like Indira Gandhi Mother Teresa, Rani Laxmibai, Tarabai, Jijamata, Savitribai Fule showed that woman are capable of doing a lot in every work.

Result of University and Board Examination show that woman have showed better than man in almost all branches of learning. We are proud that the first truck driver and the first woman Cricket Umpire is from Maharashtra. Mangeshkar family is the landmark in this respect. The Government should do everything to raise the position of woman.



## THE ROLE OF STUDENTS IN FREE INDIA

*Ku. Mahima Yadav*

B.A. II

The students of today are the future citizens of India. They are the architects of free and modern India India can become a highly developed nation like America. England, Germany, France and Canada if and only if the students contribute their might for making India a powerful country in the world. It is essential that the students discharge all their duties and work sincerely. They should understand the problems of free India and endeavour their best to solve them. In the life and the progress of the nation the role of discipline is very vital. The students should develop the habit of discipline in order to face any given situation with great confidence and success. It is also necessary to make personal sacrifice for the sake of the country. Honesty is another important trait that enables people to discharge their duties and responsibilities in a proper manner. This should be learnt and developed during the students life itself. The students can revive the lost glory of India with a strong will sacrifice, honesty and character.

India has a vast population of students who are studying in thousands of schools and colleges. These students can play a very significant role in the re-building and reconstruction of our nation. This can only happen if their energies are properly channelized.

The students possess immense youth power. In the absence of positive and constructive leadership they are led astray. The govt. should provide them with healthy and constructive leadership . In this manner they can play an important role in the progress of our nation.

The students of today are the citizens of tomorrow. Let them feel their responsibility towards the society and the nation. So that they can become good citizens later on. There are many ways in which the students can best serve their country. First of all the students should imbibe the spirit of discipline because without discipline no nation can rise in the world today. It is due to discipline alone that countries like Japan, Germany, Russia and China are today powerful nations.

The students can also be associated with the removal of many social evils in the society. The students can help in rooting out the evil of dowry from the society by taking solemn pledge. They will not accept any dowry at the time of their marriage they can help in the removal of other evils like gambling, drinking, making illicit liquor etc.

The other important role which the students can play is that they should work for the national unity and emotional integration in the country. They should work against the communal provincial linguistic and separatist tendencies in the country. They should develop and promote the spirit of Indian first and Indian last, rather than thinking in terms of a Sikh, Muslim, Christian or a Hindi.

Thus we can see that the students can play a very important role in the regeneration of their nation. The student community has a very important role to play in the progress of the country. The primary need of the hour is that students first of all discharge their duties well. They should have a goal in view and work seriously to achieve it. They should concentrate on their studies and take their examinations honestly and stop using dishonest means to pass examinations.

Further, they should discipline themselves and be able to distinguish right from wrong. This would enable them to keep away from the misguidance of politicians and people with vested interests. This would also prevent their involvement in demonstrations Strikes and other such unlawful and wasteful activities.

Students should also be involved in developmental programmes. It is again the responsibility of the educational institutions to keep an active contact with

social welfare organization and chart out programmes for students to engage in welfare activities. For instance, they can be sent to villages to hold adult writing so that these poor people are able to fend for themselves in as many spheres of life as possible.

Villagers can be taught the basics of hygiene, the usefulness of living in clear surroundings and sanitary conditions through NSS. Regular work in the villages would help the students know the other problems of these backward people and they would be able to help them tackle these problems also. Thus, educational institutions have a major role to play to involve students in constructive activities that are beneficial for the country.

Thus, the role of students in the progress of the country is a very crucial one if the country is to develop and make swifter strides towards progress. If students conscientiously fulfill their role for the development of the country, would lead to progress and prosperity. Only by engaging in constructive activities they would be able to give a fitting reply to the words of Netaji Subhash Chandra Bose who declared. “Ask not what your country has done for you but say what you have done for the country.”





## WADDLING DUCK

*Ku. Baljeet Kaur*

B.Com III

At the farm there was one animal who made the others cross because she thought she was the smartest one. “I must be the smartest animal on the whole farm,” Duck told the other animals, “because I can move around the farm in many ways to see what is happening.”

I can walk through the green fields just like you,” she told Cow and Horse. “When I get tired of walking, I can fly up into the sky.” Cow and Horse were happy walking through the fields but they wished Duck would stop quacking and leave them alone. “You are so lucky show us how you can fly.” said Cow and Horse. Duck flapped her wings and proudly flew away, quacking as she went. “I’m the smartest animal on the whole farm,” Duck told Eagle and Hawk “I can fly in the blue sky just like you, but when I get tired of flying, I can land on the lake or the pond or the river for a swim.” Eagle and Hawk loved flying high up to the clouds above the farm, but they didn’t like listening to Duck, “We can’t land on water!” they told her. “Show us how you do that.” Duck flew away and landed smoothly on the pond.

Duck swam around on the pond until she found frog and fish. “I am much luckier than you.” She told them, “because I can go more places than you can. I have been walking and flying already this morning, and now I can swim like you.”

Frog and Fish were very happy swimming in the pond, but they didn’t want Duck quacking at them about how smart she was. “You are so clever” they told her. “Show us how you can fly away.” Duck took off from the pond and flew high into the air, quacking proudly.

Duck landed beside Rabbit. “Do you know that I am the only animal on the whole farm who can fly and swim and walk ?” asked Duck. “You can’t even walk, can you?” “I just hop and run.” said Rabbit. “I don’t need to walk. When you fly, you can’t fly as high and far as Eagle and Hawk . When you swim, you can’t swim deep and fast like fish and frog. And when you walk. “Rabbit began to laugh. He laughed so much that he couldn’t talk “I wish you would tell me what is so funny about when I walk,” said Duck crossly. But Rabbit just kept laughing and giggling. “I’ll show you by the river” he said “follow me.”

At the river, he told Duck to walk beside the water and see for herself how she looked when she walked. She looked slowly along the river bank, looking at herself in the water. Poor duck could see that she didn’t walk like cow or horse. She didn’t like the funny way she looked when she walked.

Rabbit hopped along behind her, laughing loudly. “You look even funnier from the back,” he told her. That isn’t a walk at all it’s a waddle.”

Duck wished that she hadn’t said such silly things to the other animals. She felt sorry that she had thought she was the smartest.

“I am lucky that I can swim on the top of the water.” Said Duck. “I’m lucky that I can take off and land on the water when I fly. I know now that I can’t walk like cow and horse, but I can waddle around the farm.” After that Duck was happy to live quietly on the farm with the other animals.



## LAL BAHADUR SHASTRI

*Ku. Jyoti Gupta*

B.Com. III

Of choosing leaders there is no end, but for my own, Shri Lal Bahadur Shastri is



my favourite leader. He was born on October 2, 1904 in Mughalsarai, a town in U.P. He belonged to a lower middle class family. He was brought up and bred up in the cradle poverty.

Shri Lal Bahadur Shastri got his early education at Kashi Vidyapeth. It was in this place where he drank the rich springs of Indian culture and civilization. He moulded his life and living according to the Indian way of life.

After having had his education, Shri Lal Bahadur Shastri saw the poor condition of his country under British rules. He could not see the suffering of his countrymen. He was deeply moved to see his countrymen in a state of starvation and naked-ness. Compelled by these circumstances he jumped into the sea of Indian politics, he came into contact with great Indian National leaders like Nehru, Gandhi, Patel and Subhash Bose. He worked hard and fought bravely in order to free his country from the foreign rule. He became the member of the servants of the people society. He joined Congress and worked with other leaders who were organizing the national movement.

Soon after India achieved her freedom, Shri Lal Bahadur Shastri was entrusted with difficult tasks to carry. He held important officer in the Indian, National Congress and became Central Minister Several times. As a minister, whether in the Ministry Railways, Commerce and Industry or Home Affairs Shri Lal Bahadur Shastri discharged his duties efficiently and satisfactorily.

On the death of the late Shri Jawaharlal Nehru, Shri Shastri became the second Prime Minister of free India. Thus he rose from the humble origins to the top-most position of the land. The tenure of his Prime Ministership from June 1964 till his death (January 11, 1966) at Tashkent will go down in Indian history as a decisive period. It was in this period he had to face, many grave crisis like food, famine and above all Pakistani attack on India. But he emerged out from all these ordeals and trials pure like gold. In the days of India-Pakistani war of September, 1965, he gave the country a brave and dedicated leadership.

Shri Shastri was a stout democrat and staunch nationalist. He was a protagonist of Bharatiya Sanskriti. He was a man of the people. He was a blend of firmness and flexibility, of patience and perseverance. He possessed the courage of Patel as well as the Gandhian temper. He possessed all the qualities of head and heart. He was an astute politician, a superb statesman; a noted thinker and a powerful orator. He won the war but died for peace. To keep his ideals of democracy and secularism alive would perhaps be the best tribute that can be paid to the memory of this renowned patriot and noble son of India.







## SAVE THE FOREST

*Ku. Meenal Nandeshwar*

B.A. III

Our environment includes the earth's air, water, soil and all the living things that share our planet. All the earth's living things, including humans, depend upon the air, water and soil. Our planet has a rich variety of life but it is under threat because humans are using more and more of the earth's resources, making more waste and causing more pollution.

Forests are home to the world's plant, animals and insect species. And over the world, people are destroying the remaining forests. Forests are destroyed for their timber, to make way for farmlands, mining, roads and human settlements, forests are called 'lungs of the planet'. The foliage of trees in forests draws in the carbon dioxide that causes global warming and converts it to oxygen. If a tree is cut, plants and animals that depend on it for survival will die.

If we continue to use the earth's raw materials at today's fast rate, these crucial resources will soon run out. We can make raw materials last longer by reusing or recycling them. We need to use energy sources that are renewable. Humans are very inventive and intelligent, as well as very destructive and careless. If we understand that our environment is fragile, then we can help to save the precious and life giving resources that it provides. We can look after our planet, its wildlife, environment, landscapes and resources in all their variety and this is all conservation is all about.

Save the forest, Save the World.





## TREES OUR FRIENDS

*Ku. Sarita Shukla*

B.Com. I

In the great land of India, we can boast of plenty of forest. Once upon a time, there were thick forests near villages, towns and cities. Sadly, man in his greed, has cut so many trees for his comfort, that today there are floods, deserts and waste lands.

Trees are very useful to man. They prevent the rich top soil from being washed away by rain water and floods. You can see trees being planed along mountain slopes, on roadsides, on parks and gardens. Trees give us shade. They add life to a place with their colourful flower, beautiful leaves, fruits and thick trunks. They provide shelter to birds and animals. Tree give us timber, medicines, paper, gum and many other useful products. Trees take in carbon dioxide and produce oxygen. As you know by now, man needs oxygen to breathe and live.

Trees are our best friends. We should protect them and try to plant more trees around us. This is the only way we can save our earth.



## CHOCOLATE CHILDREN'S FAVORITE FOOD

*Ku. Kajal Tirpude*

B.A. III



A chocolate tree may sound like something from a book or a film but chocolate really does come from trees. A tree called 'Cocoa'. The tree grows long 'pods' that range in colours from bright yellow to deep purple. Inside it are 'cocoa beans'. It is from where the chocolate comes.



But a lot of things are to be done to the beans before they turn into chocolate. After the cocoa beans are taken out from the pods, they are left in damp place for a few days. The beans turn a rich brown colour and begins to smell like chocolate. Then they are dried and cleaned.

Next the beans are shipped to chocolate factories all over the world. There they are roasted and ground to paste. This paste contains a fatty yellow liquid called 'cocoa butter'. To make chocolate, you have to add extra cocoa butter to the paste. To make dry cocoa powder, you have to remove all the cocoa butter.

Cocoa beans are not naturally sweet. In fact the paste is very bitter. So lots of sugar is to be added to the paste. Milk may be added too. The chocolate is then poured into moulds to harden into chocolate bars. Now it is finally ready ready to eat.



## LEANING TOWER OF PISA

*Ku. Jyoti Gumastha*

B.A. III

When something captures the imagination of the world, it is remembered by people for more than other things that may be more important. Everybody knows that in the city of Pisa in Italy, there is a tower “leaning” very few know that this town has a great history. Of course, the tower itself is quite a marvel, too. It is entirely of white marble. The walls are 4 meters thick of base. It has 8 storeys and is 54.5 meters high, which in our country would be about the height of 15 story building. There is a stairway built into the walls consisting of 300 steps, which leads to the top. And by the way, those people who climb these stairs to the top get a magnificent view of the cities and of the sea, which is six miles away at the top, the tower is 5 meters out of the perpendicular. In other words, it “leans” over by 5 meters. If you want to stand at top and drop a stone to the ground, it would hit 5 meters away from the wall at the bottom of the tower! What makes it lean? Of course, it wasn’t supposed to lean when it was built, it was supposed to stand straight. It was intended as a bell tower for the Cathedral which is nearby and began in 1174 and finished in 1350.





## MARIE CURIE

*Ku. Rupa Tiwari*

B.Com - III

(1867-1934), who became the victim of radiations was the only woman scientist in the world to win two Nobel Prizes in Physics (1903) and in Chemistry (1911). She was often ill due to her excessive exposure to radioactive rays. Marie Curie died at the age of 67 from Leukaemia.

Irene Curie Joliot, like her mother Marie Curie, won Nobel prize in Chemistry in 1935 with her husband Fredrick Joliot for the discovery of artificial radioactivity. She also died untimely due to blood cancer. There are stray cases where the dedicated chemists sacrificed their own life in pursuit of discoveries in Chemistry, so as to benefit the mankind. The work of Rutherford, Niels Bohr and Albert Einstein etc paved the ways to generate electricity from nuclear energy, while Marcellin Berthelot. (1837-1907), French Chemist discovered organic synthesis and paved the ways to develop thermo-chemistry as independent branch of chemistry.

**Prafulla Chanda Ray :** (1861-1944) The year 2011 also marks the 50<sup>th</sup> Birth centenary of the great Indian Chemist Dr. P.C. Ray, who started the revolution in Indian research in chemistry. He was the pioneer of Bengal Chemical works. Had there been no such efforts by the legend Chemist, life would have been a difficult struggle today.



## 1962 - VIDEO GAMES

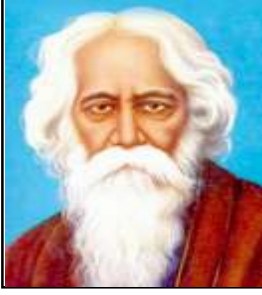
*Ku. Heena Dhanrajani*

B.Com. III

MIT programmes write Spacewar; 43 years later 89 percent of school age kids own video games. 1955/POLIO VACCINE. The year Jonas Salk finds a way to prevent polio, there are 28,985 global cases; by 2005, the number drops to 1200. 1957/three-point seatbelt according to the U.S. Department of Transportation, more than 15,000 American lives are saved in 2005 by Nils Bohlin's device.

The first general-purpose computer, the nearly 30-ton ENIAC (1947), contains 18,000 vacuum tubes, 70,000 resistors and 10,000 capacitors. In 1959, the INTEGRATED CIRCUIT puts those innards on one tiny chip. Before the entire world is networked, there is the ARPANET - four computers linked in 1969. It introduces the concept of 'packet switching', which simultaneously delivers messages as short units and reassembles them at their destination. The Apple II, Commodore Pet and Radio Shack's TRS-80 are introduced in 1977- four years before IBM, soon to become synonymous with the term "PC", unveils its PERSONAL COMPUTER. In 1989, Sir Tim Berners-Lee creates "hypertext markup language" (HTML) to make Web pages and the 'Uniform Resource Locator' (URL) to identify where information is stored. These breakthroughs form the foundation of the WORLD WIDE WEB.





## RABINDRANATH TAGORE

*Ku. Pooja Wankhede*

B.A. - I

Rabindranath Tagore was a great poet of India. He was born on May 8, 1861. His father's name was Maharishi Devendra Nath. His mother was Sharda Devi. Rabindranath was very educated, hard working and talented.

He was well known for his poems stories, novels and plays. He was a great writer. He wrote on various subjects like social reform, music, religion, politics, education etc. His novels include Gona, Raja and Rani, Bindonis and Vanda Dubt. His story Cabuliwali is very popular. It describes the psychology of a small, young girl. The change that comes with age is also described beautifully. Even a film was made on it. Gitanjali was his collection of poems. He won the noble prize for it. in 1913. After this he was famous all over the world. An university in Bengal called Shantiniketan was founded by him. He wrote the national anthem - Jana Gana Mana. He died on 8th August 1941.





## MY COUNTRY

*Ku. Namrata Prasad*

B.A. - II



Swami Vivekanand, (1863-1902) "I am proud to belong to a religion which has taught the world both tolerance and universal acceptance. We believe not only in universal toleration, but we accept all religions as true. I am proud to belong to a nation which has sheltered the persecuted and the refuges of all religious and all nations of the earth. I am proud to tell you that we have gathered in our bosom the purest remnant of the Israelites, who came to Southern India and took refuge with us in the very year in which their holy temple was shattered to pieces by Roman tyranny. I am proud to belong to the religion which has sheltered and is still fostering the remnant of the grand Zoroastrian nation.

I will quote to you, brethren, a few lines from a hymn which I remember to have repeated from my earliest boyhood, which is every day repeated by millions of human beings; 'As the different streams having their sources in different paths which men take through different tendencies, various though they appear, crooked or straight, all lead to Thee.



Sri Aurobindo, (1872-1950) : Like the majority of educated Indians, I have passively accepted without examination, the conclusion of European scholarship." That we turn always the few distinct truths and the symbols or the particular discipline of a religion into a hard and fast dogmas, is a sign that as yet we are only infants in the spiritual knowledge and are yet far from the science of the Infinite." & quot ;.... The mind is not the highest possible power of consciousness, for mind is not in possession of Truth, but only its ignorant seeker."

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, जरीपटका, नागपुर





Mahatma Gandhi (1869-1948) : Gandhi was once asked what he thought about Western Civilization. His response was & quote; I think it would be a good idea & quot. The greatness of a nation and its moral progress can be judged by the way its animals are treated.” “You must not lose faith in humanity. Humanity is an ocean; if a few drops of the ocean are dirty, the ocean does not become dirty.” “The only devils in this

world are those running around inside our own hearts, and that is where all our battles should be fought.” “If all Christians acted like Christ, the whole world would be Christian.” “Woman, I hold, is the 5 personification of self-sacrifice, but unfortunately today she does not realize what tremendous advantage she has over man.” “Indians, will stagger humanity without shedding a drop of blood.” “An eye for an eye makes the whole world blind.”



Guru Tegh Bahadur (1621-1675) : The Kashmiri Brahmins, who were being persecuted by the Mughal emperor Aurangzeb, sought the council of Guru Tegh Bahadur. The 9th Guru of the Sikhs upon hearing of the Brahmins predicament, responded: “Unless a holy man lays down his head for the sake of the poor Brahmins, there is no hope for their escape from imperial tyranny”, his young son reminded him

“Revered father, who would be better equipped for this than yourself?” During Guru Tegh Bahadur’s subsequent imprisonment by Aurangzeb, he spoke out: “Hinduism may not be my faith,... but I would fight for the right of all Hindus to live with honour and practice their faith according to their own rites.... “All men are created by God and therefore must be free to worship in any manner they like. I neither convert others by force, nor submit to force, to change my faith. “The enraged Aurangzeb, upon realising Guru Tegh Bahadur would not convert to Islam, Ordered his public beheading by the sword. His body was left in the dust as no one dared to pick up the body for fear of the emperors reprisal.



Sir C.V. Raman (1888-1970) 1930 - Nobel Laureate in Physics for work on scattering of light and Raman effect. Sir Jagdish Chandra Bose, (1858-1937) USA based IEEE has proved what has been a century old suspicion amongst academics that the pioneer of wireless-radio communication was Professor Jagdish Chandra Bose and not Guglielmo Marconi.



Satyendranat Bose, (1894-1974) Indian Physicist, who solved one of the mysteries of quantum mechanics, showing that in the quantum world some particles are indistinguishable. His collaborations with Albert Einstein led to a new branch on statistical mechanics now commonly known as the “Einstein-Bose” statistics.



Srinivasa Ramanujam (1887-1920) : Great Indian Mathematician, whose interest from academics at Trinity College, Cambridge, led him to collaborate there and postulate and prove well over 3,542 theorems.



Amartya Sen, (b-1933) : 1998 The Nobel Prize for Economics for his redefining work on ethical welfare economics. Currently residing as Lamont University Professor Emeritus at Harvard, after stepping down from the prestigious post of Master of Trinity College, Cambridge.



Subramanyan Chandrasekhar, (1914-1995) : 1983 Nobel Laureate in Physics. His many contributions to physics, on the structure and evolution of stars including rotational figures of equilibrium, stellar interiors, black holes, radiatives

transfer, hydromagnetic stability, stellar dynamics. Har Gobind Khorana, (b-1922) : 1968 - Nobel Laureate in Medicine for work on interpretation of the genetic code. Currently residing as professor at MIT.

Dr. Adbul Kalam, President of India, father of India's space, missile and satellite programme and author of "India 2020 Vision." "I have three visions for India." "In 3000 years of our history people from all over the world have come and invaded us, captured our lands, conquered our minds. From Alexander onwards. The Greeks, the Turks, the Moguls, the Portuguese, the British, the French, the Dutch, all of them came and looted us, took over what was ours. Yet we have not done this to



any other nation. We have not conquered anyone. We have not grabbed their land, their culture , their history and tried to enforce our way of life on them. Why? Because we respect the freedom of others. That is why my first vision is that of FREEDOM. I believe that India

got its first vision of this in 1857, when we started the war of independence. It is this freedom that we must protect and nurture and build on. If we are not free, no one will respect us." My second vision for India is DEVELOPMENT. For fifty years we have been a developing nation. It is time we see ourselves as a developed nation, self-reliant and self-assured. I have a THIRD vision. India must stand up to the world. Because I believe that unless India stands up to the world, no one will respect us. Only strength respects strength. We must be strong not only as a military power but also as an economic power. Both must go hand-in-hand."



# POETRY SECTION



## RAIN

*Ku. Payal Kewalramani*

B.A. - II

As the drops of joy,  
Touch the mighty ground,  
Even the ground becomes clam like a soft toy.  
There is fun and happiness around.  
Children splutter in the puddles,  
Dry rivers come back to life,  
The strong sun cuddles,  
When rain isn't there, rocks become as sharp as  
a knife,  
When the rain is too much,  
It leads to flood,  
The problems is such,  
That it takes away a lot of blood,  
In deserts it doesn't rain for days,  
People have to take a lot of pain  
The tree  
What greenery do forests gain!!!

## WHEN I ASKED GOD

*Ku. Margret Glory*

B.A. - II

When I asked God for strength  
He gave me difficult situations to face  
When I asked God for Brain and Brown,  
He gave me puzzles in life to solve.  
When I asked God for happiness.  
He showed me some unhappy people.  
When I asked God for wealth.  
He showed me how to work hard.  
When I asked God for favors  
he showed me how to work hard.  
When I asked me how to work hard.  
When I asked God for favors  
he showed me opportunities to work hard.  
When I asked God for peace  
He showed me how to help others.  
God gav .....ted  
He gave .....eded.



## SCHOOL LIFE

*Ku. Shefali Nandeshwar*

B.A. - II

School is a daily routine for us.  
In the morning, we are sure to make fuss.  
Even when the sun's still not up,  
Here we are, awake at 6am sharp.  
We feel that school is such a bore.  
We feel that school is such a chore.  
Parents say, 'school's great now go !'  
We say, "Well, what do you know ?"  
Late a minute and we have to run.  
Eyes half open, shoelaces undone.  
We reach school and we see our friends,  
Immediately, the torture ends.  
We have to go with the flow when the bell rings,  
it is time to go we say at times.  
Talk back to teachers, and punishment we serve  
No doubt, it is sometimes we deserve.  
Sometimes they are as cold as ice  
And other times they're actually really nice.  
Some may see school as sunny days,  
But some cannot wait for the holidays  
But it depends on how we look at school.  
Honestly, positively, school is cool !







## VALUE EVERY MINUTE

*Ku. Chandrakanta Sharma*

B.A. - II

To realize the value of one year :

Ask the student who has failed a final exam.

To realize the value of one month :

Ask the mother who has given birth to  
premature baby.

To realize the value of one week

As the editor of a weekly newspaper.

To realize the value of one hour :

Ask the long lost friends who are waiting to meet.

To realize the value of one minute.

Ask the person who missed the train, bus or plane.

To realize the value of one millisecond

Ask the person who missed the train, bus or plane.

To realize the value of one millisecond

Ask the person who had won the silver medal in olympics.

“Time waits for no one “Tresure every movement you have.







## MY TEACHER

*Ku. Khushboo Barsagade*

B.Com. - I

For pointing out what is good and bad,  
For giving enough examples to explain every concept,  
For bringing out hidden talent in me,  
For always being there whenever I needed advice,  
For teaching me beautifully, the subject of life  
For caring like a Mother,  
Guiding like a Father,  
Encouraging like a friend and blessing like God.  
Thanks for everything dear Madam.





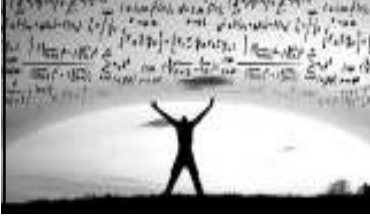
## SELF CONFIDENCE

*Ku. Shivani Pande*

B.A. - I

There is always a sparkle in fire  
a force in wind,  
coldness in water,  
kindness in animals,  
softness in fur.  
Why don't you,  
Have confidence in you ?  
But there is also  
Fire in volcanoes,  
storm in winds,  
Whirlpools in water,  
Fury in animals  
roughness in fur  
So don't have overconfidence in you.  
The Fish in the water is silent,  
the animal on the earth is noisy  
the bird in the air is singing  
but man in him the silence of the sea  
the noise of the earth  
and the mus





## LIFE IS MATH

*Ku. Vanshita Jhambhulkar*

B.Com. - II

Life is Mathematics,  
Add your happiness.  
Subtract your sorrows.  
Multiply your friends.  
And divide your enemies

Life is an Angle,  
which can anytime divert  
Into different directions.

Life is a Triangle  
If agreed, it is an equilateral  
but if not it is a scalene.

Life is a line  
Which flows in the direction,  
of happiness and sorrow  
After all, life is a segment,  
which can stop anywhere.





## WINTER SONG

*Ku. Anchal Sahu*

B.Com. - II

Winter's here, winter's here  
Oh, it's very cold,  
Wear your woollies everyone,  
Let's play out in the snow,  
Winter's here, winter's here.  
Look what mamma's got !!  
A bowl full of tasty soup,  
A glass of chocolate hot.

Lots of fruits we must eat,  
Less of chocolates.  
And less of sweets.  
Fruits make you strong,  
they make you live long,  
They give you energy to play,  
That will last you all the day.





## SNOWFALL

*Ku. Rachana Bansod*

B.A. - II

When the sun has given its all,  
Each heart eagerly waits for a snowfall.  
The white dots filled the sky,  
with a soft, pleasant breeze that passes by.  
But when the snow doesn't fall,  
It's sure that it disappoints all.  
They just stop in the dark Ocean,  
A long desire busy into a worthless notion,  
the cool sky gray and fresh  
To enjoy, the people make a mesh  
Everyone gathered on the footpath,  
Still they remember the aftermath.





International Yoga Day Yogacharya Kedarji Joshi



“One student - One Tree” Campaign Programme

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, जरीपटका, नागपुर





स्वच्छता पखवाडा कार्यक्रम मे मा. किशोर बांगडे (लोकमत पत्रकार)  
प्राचार्या डॉ. श्रद्धा अनिलकुमार कार्यक्रम अधिकारी, डॉ. पाठक, प्रा. थूल



स्वच्छता पखवाडा कार्यक्रम



**Swachhta Pakhwada Programme**



**World Population Day**

દયાનંદ આર્ય કન્યા મહાવિદ્યાલય, જરીપટકા, નાગપુર





HIV - HEALTH Check up Camp



मतदार जागृती कार्यक्रम



**Blood Donation Camp**



**Eye Check up Camp**





प्राचार्या, डॉ. श्रद्धा अनिलकुमार छात्राओं का फायलेरिया की दवाई देने का प्रशिक्षण देते हुये।



पथनाट्य द्वारा फायलेरिया (हाथीपाँव) निष्कासन अभियान जनजागृती कार्यक्रम मे छात्राएँ

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, जरीपटका, नागपुर



**Inter -Collegiate cross country Run - Dayanand Arya Kanya  
Mahavidyalaya**



**Cross - Country**